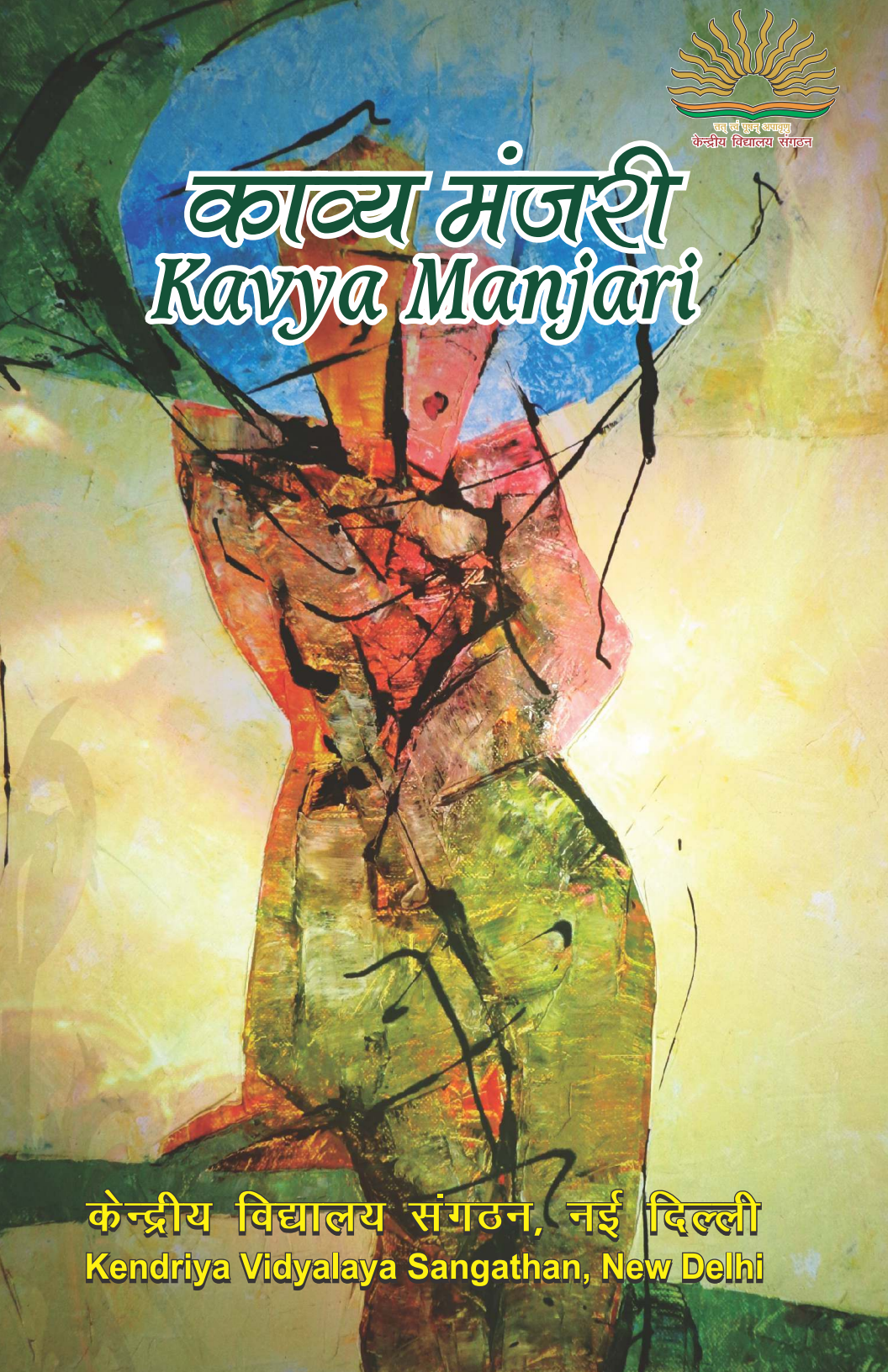

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

काव्य मंजरी
Kavya Manjari

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली
Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi

काव्य मंजरी

भाग-13

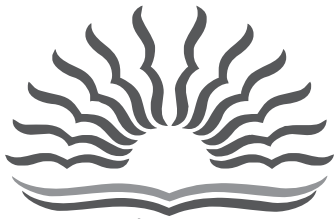

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

© केन्द्रीय विद्यालय संगठन

काव्य मंजरी, भाग–13

शिक्षक दिवस–2019 के उपलक्ष्य में प्रकाशित केन्द्रीय विद्यालय शिक्षकों एवं कर्मचारियों द्वारा रचित काव्य संकलन

कुल प्रतियां: 1600

मार्गदर्शन : **संतोष कुमार मल्ल**
आयुक्त, के.वि.सं

प्रधान संपादक : **उदय नारायण खवाड़े**
अपर आयुक्त (शै), के.वि.सं.

संपादक : **डॉ. ई. प्रभाकर**
संयुक्त आयुक्त (प्रशिक्षण)

संपादकीय प्रभारी: **सचिन राठौर**
सहायक संपादक, के.वि.सं. (मु.)

प्रूफ रीडर : **नेगपाल सिंह**
प्रूफ रीडर, के.वि.सं. (मु.)

आवरण पृष्ठ : **सुनील कुमार**
टीजीटी (कला), केन्द्रीय विद्यालय सिवान (बिहार)

उदय नारायण खवाड़े, अपर आयुक्त (शैक्षिक), केन्द्रीय विद्यालय संगठन, मुख्यालय, नई दिल्ली, द्वारा प्रकाशित।

मुद्रक : **डॉल्फिन प्रिंटो–ग्राफिक्स,** 1ई/18, चतुर्थ तल,
झण्डेवालान एक्सटेंशन, नई दिल्ली–110055

दो शब्द

केन्द्रीय विद्यालय संगठन के वार्षिक प्रकाशन 'काव्य मंजरी' का 13वां अंक पाठकों के हाथ में सौंपते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। यह पुस्तक देश भर के केन्द्रीय विद्यालयों के शिक्षकों एवं कार्मिकों की रचनाओं का भावात्मक संकलन है। जिन रचयिताओं की कविताओं का इस पुस्तक के लिए चयन हुआ है, मैं उन सभी को हार्दिक बधाई देता हूं।

मुझे इस पुस्तक के माध्यम से केन्द्रीय विद्यालय संगठन के शिक्षकों एवं कार्मिकों की रचनाधर्मिता को देखकर विशेष हर्ष हो रहा है। कार्यालय और परिवार की जिम्मेदारियों के बीच समय निकालकर रचनात्मक सृजन कर पाना विशेष रूप से सराहनीय है। पिछले कुछ वर्षों की 'काव्य मंजरी' पुस्तक को देखें तो हम पाएंगे कि हमारे शिक्षकों एवं कार्मिकों की सृजनशीलता में नित नया विस्तार आ रहा है। यह आगे चलकर और भी अधिक निखरेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

देश के अलग–अलग कोनों में स्थित केन्द्रीय विद्यालयों से प्राप्त हुई विविध शैलियों की रचनाओं को इस पुस्तक में संजोया गया है। हर कविता एक अलग भावना को व्यक्त करती हुई नज़र आती है। हम कह सकते हैं कि यह पुस्तक अलग–अलग भावों की एकीकृत अभिव्यक्ति है और देश भर में फैले 1227 केन्द्रीय विद्यालयों में कार्यरत सभी शिक्षकों एवं कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिनिधि है।

रचनाकारों की सृजनशीलता की एक बार पुनः प्रशस्ति करते हुए, मैं सबको अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

संतोष

(संतोष कुमार मल्ल)
आयुक्त,
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

कविताओं की सूची

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
1	शिव शिवा सिवा शव हैं सब रे	यू.एन.खवाड़े	1
2	गतिस्त्वं–गतिस्त्वं	पी सी खुल्बे	3
3	मेरी पुकार	नवल किशोर	5
4	मुझको माँ का प्यार चाहिए...	अनिल कुमार	6
5	सरल न कुछ भी जीवन में	लिली सिंह	8
6	बहु–प्रतिभा के प्रकार	डॉ. भोजराज रतिराम लांजेवार	9
7	मै अस्सी नदी हूँ	उदय सरोज अग्रवाल	11
8	स्वप्न नहीं सच्चाई है	श्रद्धा आचार्य	12
9	हौसला	फूलचंद्र विश्वकर्मा	13
10	बाबा नागार्जुनः एक स्मृति	डॉ. हृदय नारायण उपाध्याय	14
11	जो हिंदी न रह जाएगी	उमाशंकर पंवार	15
12	मधुरिम बेला	नलिनी ओझा	17
13	मैं दीप जलाता हूँ	विनोद कुमार तिवारी	18
14	मेरा हिस्सा	अवनि प्रकाश श्रीवास्तव	19
15	अभिशप्त	धर्म नारायण	20
16	पानी की बात	डॉ. मेधा उपाध्याय	22

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
17	सच्चा विद्यार्थी	रवीन्द्र कुमार	23
18	जग की हालत	दिव्या	24
19	जल की व्यथा–कथा	नीना बख्शी	25
20	शोक–काव्य	डॉ. राजेन्द्र सिंह	27
21	जीवन आधार	दीपिका पांडे	28
22	हिंदी है सरल	मनोज शर्मा	29
23	पिता को समर्पित वह शाम	अनूप कुमार निगम	30
24	सफर	सुनीता खरे	31
25	पहचानों खुद को	शमसुननिसा	32
26	बच्चा	डॉ. ऋतु त्यागी	33
27	चल अकेला	सिम्मी सिंह	34
28	वक्त सशक्त है	रविता पाठक	35
29	मानवता को बचाएं ज़रा–ज़रा	पी. जयराजन	36
30	आदर्श शिक्षक	ओम प्रकाश गोस्वामी	37
31	जीवन – लक्ष्य	शुभम शेखर कटियार	38
32	मेरा घर मेरा संसार	निरुपम कुमार गुप्ता	39
33	शहर आ गया गाँव में	डॉ. आनन्द कुमार त्रिपाठी	40
34	मैं जिंदगी को इस कदर जिये जा रहा हूँ	शिवलाल सिंह	41
35	किताब	अनिता कुमार	42

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
36	गीतिका	डॉ. बिपिन पाण्डेय	44
37	शिक्षक हूं मैं	मीता गुप्ता	45
38	गज़ल	हरजीत राही	46
39	नयापन	रंजना सिंह	47
40	फिर से सम्मान दिलाना होगा	रमेश कुमार	48
41	भूमंडल के पालनहार	सहजानन्द कुमार	49
42	मन	शोभा दीक्षित	51
43	बेटियां	सीमा शर्मा	52
44	शिक्षकः दीपक की रोशनी	रुद्र पाल सिंह परिहार	53
45	दोस्त	उर्मिला रावत	54
46	जन्म दे हे! जननी	दिलीप विद्यानंदन	57
47	यादों का कारवाँ	नरेश कुमार अंजान	60
48	देश प्रिय हो	राकेश कुमार झा	61
49	प्रेम	राजेश द्विवेदी	62
50	बढ़ती जनसंख्या	अरविन्द कुमार	63
51	खूबसूरत माँ	आकांक्षा सेम्युएल	64
52	एक संकल्प	दीप्ति सहाय	66
53	केंद्रीय विद्यालय– ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' का दर्पण	विपिन कुमार मौर्य	68
54	इंसानियत का कोई मजहब नहीं होता	प्रीतम कुमार शर्मा	70

क्र	शीर्षक	रचयिता का नाम	पृ.सं.
55	खामोश आदित्य	कृष्ण कौशिक	72
56	नदी पहाड़ों का सच है	परमानन्द	74
57	सुनहरी सुबह	कमला निखुर्णा	76
58	नव प्रभात	कपिल कुमार	78
59	संकल्प दृढ़ प्रतिज्ञ रहें	डॉ. असद अहमद	79
60	तकदीर	तेजपाल	80
61	उम्मीद	विनोद कुमार पाठक	82
62	ज्ञान की खेती	संदीप कुमार	84
63	केंद्रीय विद्यालय संगठन	शीश पाल	86
64	सफलता	महेश कुमार मीणा	87
65	चलो एक नया हिंदुस्तान बनाते है	ममता श्री सिंह	88
66	अपराधी कौन	प्रदीप कुमार	90
67	खुशियों का पता	साधना कुमारी सचान	91
68	फानी–एक महातूफान	प्रवीण कुमार	92
69	खरे–खारे	डॉ. विधि बिष्ट	95
70	परिंदे	अनिल कुमार यादव	96
71	स्कूल चलें हम	जगदीश सिंह यादव	97
72	किसी के बारे कुछ भी अक्सर कह जाते हैं लोग	डॉ. शचिकांत	98

S.No.	Tittle	Name of Poet	P. No.
73	The Absolute	Basudev Chakraborty	99
74	Let Us Ponder!	Jaibala Prakash	100
75	A Plea	C. Madhuri	102
76	Life ....In Its True Shades!!!	Amit Kumar Pandey	104
77	A Letter to Parents	Biranchi Narayan Das	105
78	Lesson for Lifetime	Ashwini Kumar	106
79	Flight of Fancy	Sruti Agarwal	107
80	The Morning Dew	Manju Pathak	109
81	Feminism –A Vision For An Equal World	Garima Joshi	111
82	A Lasting Name	Dr. S.S. Aswal	112
83	Epiphany	Preeti Roy	113
84	I Found It	Rupam Bhatnagar	115
85	Life A King Size	Bhagyashree P Mokashi	117
86	Not Alone on the Path to My Home	B. Lekha	118
87	The Curse of The Kosi	Elizabeth K. Philip	119
88	All is Not Lost	Jayasree Bhattacharyya	121
89	The First Footstep	Sudip Mazumdar	122
90	Jolly Moments...	Neelam Dudi	123
91	My Mother Doesn't Work	Pramod Barik	125
92	Scientific Temperament	JSV Lakshmi	127
93	The Sunrise.... in Kashmir	Veena Lidhoo	129

1
शिव शिवा सिवा सब हैं शव रे

शिव शिवा सिवा सब हैं शव रे शंकर कर में शंका रख लो
भोले का भाव भरो मन में महादेव की माला जप लो
शिव शिवा सिवा सब हैं शव रे शंकर कर में शंका रख लो

देव देवेन्द्र मनुज दनुज त्रिपुरारि का जो ध्यान धरे
तांडव डमरू से जाये गूंज सत सुन्दर शिव का गान हरे
शम्भू जटा से पाप–नाशिनी बहती वैसी तुम भी बह लो
शिव शिवा सिवा सब हैं शव रे शंकर कर में शंका रख लो

सागर–मंथन का काल कूट पीकर रोका था विश्वनाथ
है नीलकंठ के जटाजूट प्यालों मालों पर चंद्रहास
उस उमापति का ध्यान करो मुश्किल संशय संभव कर लो
शिव शिवा सिवा सब हैं शव रे शंकर कर में शंका रख लो

ज्ञानी विज्ञानी महादानी रामेश्वर रोम रोम रमता
सत्तर जन्म दैहिक दैविक भौतिक त्रिशूल है अरिहन्ता
कोप खत्म कर भोग भस्म कर वाघम्बर पर तप कर लो
शिव शिवा सिवा सब हैं शव रे शंकर कर में शंका रख लो

कालों के वो महाकाल वे वैद्यों के हैं वैद्यनाथ
चारों आश्रम उन पर निहाल, प्रणव पशुपति विश्वनाथ
योगेश्वर हे आशुतोष भैरों वृषभ वर हर कर लो।
शिव शिवा सिवा सब हैं शव रे शंकर कर में शंका रख लो

शिव शिवा सिवा सब हैं शव रे शंकर कर में शंका रख लो
भोले का भाव भरो मन में महादेव की माला जप लो
शिव शिवा सिवा सब हैं शव रे शंकर कर में शंका रख लो

उदय नारायण खवाड़े
अपर आयुक्त (शैक्षिक)
केविसं (मुख्यालय), नई दिल्ली

2
गतिस्त्वं - गतिस्त्वं

किंकर्तव्यविमूढ़ पार्थ था व्यथित हुआ,
प्रबल पराक्रम परमवीर का क्षीण हुआ।
उस महासमर का महावीर निःशब्द आज,
असहाय हाय धरती पर क्यों निस्तेज हुआ ?

गुरु द्रोण, भीष्म, कृप महारथी जैसे ज्ञानी,
शौर्यगान जिसका नित – नित्य किया करते।
रणभूमि भयंकर हुंकारों टंकारों की,
गाँडीव आज गुरु से गुरुतर क्यों बना हुआ ?

फिर स्मृति–पटल चल–चित्र सदृश कल्लोल हुआ,
था धुर अतीत में मन फिर डावां – डोल हुआ।
बाल्यकाल से अब तक की हर घटना का,
फिर सखा कृष्ण का साथ याद अनमोल हुआ ?

फिर लाक्षागृह, द्रौपदी–रुदन, बनवास पुनः,
अत्याचार हर बार निरंतर स्मरित हुआ।
अपमान हलाहल प्याला विष का पीकर भी,
निज बंधु हेतु भी पाँच ग्राम वह पा न सका ?

'सूच्यग्रं नैव दास्यामि बिना युद्धेन केशव,'
संदेश दुष्ट दुर्योधन का जब पांडव दल में प्राप्त हुआ।
फिर समर एक ही था विकल्प, भावी प्रबल,
परिणाम विश्व को विदित हुआ इतिहास बना ?

अहंकार जब दुर्योधन बन आ घेरे,
परिणाम महाभारत फिर निश्चित ही होता।
फिर शक्ति–पुंज निज शक्ति प्रयोजन सिद्ध जान,
अर्जुन से शक्ति पुनः वापस ले लेता है ?

है जीवन कठिन कुरुक्षेत्र कृत कर्मों का,
जिसमें होता हर पल, हर क्षण संघर्ष यहाँ।
हों कृष्ण सारथी सत्य, समर्पण, शुचिता के,
पथ आलोकित हो दिव्य विजयश्री सदा वहाँ ?

पी.सी. खुल्बे
वरिष्ठ अनुवादक
के.वि.सं (मुख्यालय), नई दिल्ली

3
मेरी पुकार

ये बढ़ती जनसंख्या है या महामारी का अवतार है
सब तरफ फैली त्राहि–माम् त्राहि–माम् की पुकार है
न खाना न पानी न रहने का कोई ठिकाना है
पर लोगों को तो अपना परिवार बढ़ाते जाना है

पूछो तो कहते हैं, यह तो ऊपर वाले की देन है
हम तो सबसे कहते हैं, ऐसी बातों पर लगाना बैन है
बढ़ती जनसंख्या से वनों का हो रहा विनाश है
क्योंकि जरूरत के हिसाब से हमें चाहिए आवास है

अगर ऐसे ही जनसंख्या बढ़ती जाएगी
पूरे विश्व में विनाशक कयामत लाएगी
पानी, खाने, रहने को तरसेंगे लोग
चारों तरफ नज़र आएगी बस मौत ही मौत

अभी भी समय है परिवार–नियोजन अपनाओ
हे मेरी सरकार! इस पर नया कानून बनाओ
जब बढ़ती जनसंख्या को हम काबू कर पाएँगें
तब सशर्त हम खुशहाल विश्व बनाएँगें।

नवल किशोर
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, गोल्डन रॉक, तिरुच्चि

4

मुझको माँ का प्यार चाहिए

नहीं बड़ा घर–बार चाहिए,
न झूठा संसार चाहिए,
सीधा–सच्चा प्यार चाहिए,
मुझको माँ का प्यार चाहिए।

रंग बदलती दुनिया देखी,
जिससे लाभ मिले उसके संग
हमने चलती दुनिया देखी,
ऐसा न व्यापार चाहिए
मुझको माँ का प्यार चाहिए।

माँ की लोरी सुनकर सोना
माँ संग हँसना माँ संग रोना
झूठ–मूठ रो उन्हें मनाना
ऐसा ही अनुराग चाहिए
मुझको माँ का प्यार चाहिए।

छुट्टियाँ मनाने गाँव में जाना
चाचा–मामा संग मौज मनाना
कच्चे आम तोड़ के खाना
नानी–दादी का लाड़ चाहिए
मुझको माँ का प्यार चाहिए।

हुए बड़े तो छूट गया सब
बचपन भी तो रूठ गया अब
दिल तो बच्चा रहना चाहता
मुझको ममता का साथ चाहिए
मुझको माँ का प्यार चाहिए।

नकली चेहरा रखने वाले
हैलो–हाय बोलने वाले
मुँह में राम बगल में छुरी
ऐसा नहीं संग साथ चाहिए
मुझको माँ का प्यार चाहिए।

माँ की ममता सबसे प्यारी
माँ में बसती जान हमारी
बिन माँ जीवन सूना लगता
माँ का मुझको दुलार चाहिए
मुझको माँ का प्यार चाहिए।

अनिल कुमार
वरिष्ठ सचिवालय सहायक
केन्द्रीय विद्यालय संगठन, आगरा संभाग

5
सरल न कुछ भी जीवन में

उपलब्धि नहीं आती झोली में
सरलता से जीवन में
न मिलती कोई चीज कभी
धारण करके केवल मन में

जब अंतर्मन के द्वंद्व और
संघर्ष से जूझता है यह मन
विश्वास न डिगने दे खुद से
बढ़ता है तभी वह जीवन में।

अवरोध किसी के जीवन में
क्या सदा के लिए टिक पाया है?
अटल प्रयास के समक्ष सदा ही
झुकता उसको पाया है।

सच्ची तलाश, सच्चा प्रयास
न धोखा देता हमें कभी
जीवन का यह इक मंत्र सदा
मुमकिन कर देता लक्ष्य सभी।

तपकर कनक ने अग्नि में
ज्यों अद्भुत निखार को पाया है
विश्वास से जब भी बढ़ा कदम
मंजिल को करीब ही पाया है।

लिली सिंह
प्राथमिक शिक्षिका
केंद्रीय विद्यालय, पश्चिम विहार, दिल्ली

6
बहु-प्रतिभा के प्रकार

व्यक्ति में होती हैं प्रतिभाएं सात।
हॉवर्ड गार्डनर ने कही है बात ।।1।

पहला प्रकार, दृश्य का संबंध।
नक्शा, चार्ट, चित्र, वीडियो का बंध ।।2।।

दूसरा प्रकार, शब्दों व भाषा का खेल।
सुनना, बोलना, लिखना तीनों का मेल ।।3।।

तीसरा प्रकार, तार्किक, गणितीय प्रतिभा।
वजह, तर्क, संख्या उपयोग की क्षमता ।।4।।

चौथा प्रकार, दैहिक एवं इन्द्रिय का उपयोग।
संतुलन, हाथ से आँख का समन्वय ।।5।।

पांचवाँ प्रकार, संगीत और ताल।
गाना, बजाना, नाचना, ध्वनि का जाल ।।6।।

छटवाँ प्रकार, अंतर व्यक्तित्व को समझना।
विश्वास निर्माण एवं संघर्ष सुलझाना ।।7।।

सातवाँ प्रकार, अंतः व्यक्तित्व का अभ्यास।
अंतर्भावना, संबंध, शक्ति का मन से न्यास ।।8।।

अन्य प्रकार की तीन प्रतिभाएं हैं जागतिक।
अस्तित्व, आध्यात्मिक और प्राकृतिक ।।9।।

यदि अपनाएंगे हम बच्चों में विविध प्रतिभाएँ।
बढ़ेंगी चतुःर्मुखी विकास की संभावनाएं ।।10।।

डॉ. भोजराज रतिराम लांजेवार
प्राथमिक शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय, ऑर्डनैन्स फैक्टरी,
अम्बाझरी (महाराष्ट्र)

7
मैं अस्सी नदी हूँ

मूर्छित चक्षुओं को खोलती,
अपना अस्तित्व टटोलती,
काल के विकराल की मैं एक छवि हूं,
मैं अस्सी नदी हूं।

संताप आपको सहेजती,
अपनों का दंश झेलती,
दुख– दुर्भाग्य से गड़ी हूं,
मैं अस्सी नदी हूं।

मानस की रचना स्थली,
पर्यावरण की एक धुंधली कड़ी,
गरिमापूर्ण इतिहास से सजी हूं,
मैं अस्सी नदी हूं।

काशी की सीमा उकेरती,
वरुणा गंगा अस्सी,
असहाय सी खड़ी हूं,
मैं अस्सी नदी हूं।

स्वयं का परिचय कराती,
मैं च्यवन की शुष्केश्वरी,
अब विलुप्त हो चली हूं,
मैं अस्सी नदी हूं।

उदय सरोज अग्रवाल
टी.जी.टी. (सा.अ.)
केन्द्रीय विद्यालय, जेएनयू, न्यू महरौली रोड, नई दिल्ली

8
स्वप्न नहीं सच्चाई है

युगों–युगों से भारत ने ही
शांति ध्वजा लहराई है
विश्वशांति के रहे समर्थक
यह स्वप्न नहीं सच्चाई है।

यहाँ एकता और अखंडता
का भाव सभी ने जाना है
ऋषि मुनियों के उपदेशों को
हमने हरदम माना है।

ज्ञान ग्रहण करने को हर क्षण
तत्पर रहती तरुणाई है
यह स्वप्न नहीं सच्चाई है।

थीं भेदभाव की जो दीवारें
हमने सदा ही ध्वस्त किया
समरसता का पाठ पढ़ाकर
बाधाओं को भी पस्त किया।

देख देश की चहुँमुखी प्रगति
लो जनता भी मुस्काई है
यह स्वप्न नहीं सच्चाई है।

उन्नत कृषि हैं करते किसान
बाँध कर देते हैं समाधान
भरपूर अन्न का भण्डारण
करता सबको जीवन प्रदान।

नई सदी की प्रतिभाओं से
सारी दुनिया थर्राई है
यह स्वप्न नहीं सच्चाई है।

श्रद्धा आचार्य
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, खुरदा रोड,
भुवनेश्वर (ओडिशा)

9
हौसला

जिनमें होता है हौसला कुछ कर गुजरने का,
वे डरते नहीं किसी इम्तिहान से।
मुश्किलें उनको छू नहीं सकतीं,
मनोबल डिगता नहीं किसी तूफ़ान से।।

मार्ग में भले आएं अनेक बाधाएं,
डगमगाते नहीं कदम कभी मैदान से।
भाग्य का आवरण ओढ़ कभी बैठे नहीं रहते,
सारे गम हो जाते फ़ना, उनकी एक मुस्कान से।।

उनकी कश्ती कभी भँवर में फँसती नहीं,
जिनका नाता नहीं होता कभी आराम से।
आगे बढ़ जो लोहा लेते हैं मुसीबतों से,
जिंदगी अपनी जीते हैं सदा शान से।।

कर्मवीर कहलाते हैं वे हार नहीं मानते,
संघर्षों को जीत लेते हैं सदा सम्मान से।
मंजिल चूमती है कदम उनके,
जो बिना लक्ष्य पाए रुकते नहीं अनजान–से?

फूलचंद्र विश्वकर्मा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक–2, हलवारा (पंजाब)

10
बाबा नागार्जुनः एक स्मृति

यायावर सा जीवन जीकर लोक–धर्म अपनाया,
लोगों पर वात्सल्य लुटाकर 'बाबा' संज्ञा पाया।

भाव और दर्शन कबिरा का, मन चंचल बालक–सा
मधुर कल्पना कालिदास की, गंध–रूप देशज–सा।

कृत्रिमता के तोड़ पाश को, लौकिक सच स्वीकारा,
संस्कृत, मैथिल और हिन्दी में, अभिनव सृष्टि संवारा।

बातें उनकी बहुत रसीली, मुक्तकंठ हंसी थी,
बार्धक्य को धता बताती, जिजीविषा प्रबल थी।

यात्री से नागार्जुन बनने में, संकल्प बहुत प्रबल था,
लोकतत्व और लोकरंग ही, इस पथ का संबल था।

प्रगतिशील चिंतन के क्रम में, ठेठ देहातीपन था,
कथाकार के अंतरतम में, जनकवि का आसन था।

डॉ. हृदय नारायण उपाध्याय
पीजीटी (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, 9 बी.आर.डी., पुणे (महाराष्ट्र)

11

जो हिंदी न रह जाएगी

कैसे भारतवर्ष रहेगा, कैसे यह उत्कर्ष रहेगा,
सदियों की यह अविचल थाती मिट्टी में मिल जाएगी,
जो हिंदी न रह जाएगी!

कैसे गर्व करोगे खुद पर, कैसे दंभ भरोगे खुद पर,
सारी गरिमा, सारी महिमा पानी–सी बह जाएगी,
जो हिंदी न रह जाएगी!

भरतमुनि का नाट्य मरेगा, सीख मरेगी कबिरा वाली,
मीरा वाली अनुपम प्रीति, जीते जी मर जाएगी,
जो हिंदी न रह जाएगी!

कौन साँगा का शौर्य पढ़ेगा, शत्रु–सेना पर कौन चढ़ेगा,
कौन पढ़ेगा कथा रानी 'झाँसी' की, कथाएँ कौन जाने फाँसी की,
गाथाएँ वो बलिदानों की पन्नों में दब जाएंगी।
जो हिंदी न रह जाएगी!

मधुशाला के घट रीतेंगे, दिन बीतेंगे महादेवी के,
माखन–पन्त–निराला की तो दुनिया ही लुट जाएगी,
जो हिंदी न रह जाएगी!

आओ मिलकर यज्ञ करें हम, मिलकर सब आहुति डालें,
कमर कसें सब मिलकर अपनी, माँ का राजतिलक कर डालें।

उमाशंकर पंवार
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, एन.एच.पी.सी. चमेरा–1,
(हिमाचल प्रदेश)

12

मधुरिम बेला

शाम की तपिश के बाद
उगते सूरज की लाली में
विहगों का मधुर कलरव
कलियों के साथ अठखेलियाँ करने लगा।
बहती हवा को छू उड़ान भरने लगा।

दूर से आती मंदिर की घंटियों की ध्वनि से
मन स्वतः शुद्ध हो नतमस्तक होने लगा।
उस अखिल शक्ति के प्रति
जिसकी अनुकंपा से,
सृष्टि का कण–कण, सिंच रहा था,
सुषमा की आभा में लिपटा
चतुर्दिक फैला शुचिता और सौंदर्य का प्रकाश,
नई स्फूर्ति, नई ऊष्मा, और नई आस मन में जगाने लगा।

हर्ष की परत में ढकी सुहावनी सुबह
मन ही मन गुनगुनाने लगी।
रस घोलती प्रत्यूष की बेला,
धीरे–धीरे माँ के अंचल में छिटकने लगी।
सुमन की अधखिली कलियाँ,
रश्मि का स्पर्श पा खिलने लगी।
जीवन के राग में कर्म करने की पुकार आने लगी।
जीवन बिहँसा सुबह की मधुरिम बेला में।।

नलिनी ओझा
टीजीटी (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय, 9 बी आर डी, पुणे
(महाराष्ट्र)

13
मैं दीप जलाता हूँ

बेतरतीब बिखरे ज्ञान को समेटता हूँ
कभी साथ तो कभी अकेले निकल पड़ता हूँ
छेड़ के तराने गम सब भूल जाता हूँ
कभी खुद के तो कभी उनके पास जाता हूँ–मैं दीप जलाता हूँ

मंज़िलें तो होती हैं सब उनके ही स्वप्न संसार की
मैं हटा के काँटे वहाँ बस रास्ता बनाता हूँ
बोलता हूँ कभी कड़वा कि मिठास मिल सके
उनको मिलेगी चाह उनकी, यह विश्वास दिलाता हूँ–मैं दीप जलाता हूँ

खुद को हूँ गलाता पिघलाता मोम–सा हूँ
जलाकर बातियों–सा एक दीप जलाता हूँ
मैं एक नया सुखद स्वप्न सजाता हूँ
बुहारकर अँगने में उनके तुलसी लगाता हूँ–मैं दीप जलाता हूँ

पूछकर मैं उनकी कठिनाइयों का हिसाब रखता हूँ
खुद से कहीं ज्यादा, उनका हिसाब रखता हूँ
कभी झल्लाते हैं बच्चे मेरे क्यों उन्हें आज़ाद नहीं करता
व्यर्थ क्यों ये दूसरों का चिंता भरा असबाब लाता हूँ–मैं दीप जलाता हूँ

कभी समझा नहीं पाया जमाने को, कि चाहत अधूरी है
नन्हें चन्द्रगुप्त के बिना, चाणक्य की जिंदगी अधूरी है
जलाऊंगा मशाल, भले ये हाथ मेरा जलता हो
घनी अंधेरी राह में, उजाले का दीप जलाता हूँ।
मैं दीप जलाता हूँ घनी अंधेरी राह में उजाले का दीप जलाता हूँ।
मैं दीप जलाता हूँ।

विनोद कुमार तिवारी
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक–1, रायपुर (छत्तीसगढ़)

14
मेरा हिस्सा

क्षितिज तक, बिखर आती है,
धूप–आँखों से, खुशबू लेकर,
गुलमोहर–फिर–एक,
अपना सा, तिलस्म रचते हैं,
मेरी हिस्से की रोशनी, सच में बेहद सुन्दर है!

बादलों की सरसराहट,
ठीक कानों को, छूकर बह रही है,
माथे पर, सिमटती हवा,
नम कर जा रही है–हर एक खुरदुरा अहसास,
मेरे हिस्से का स्वप्न, सच में बेहद सुन्दर है!

पल भर में, एक सहजता,
रंग देती है, ह्रदय का हर कोना,
उँगलियों की थिरकन,
उकेर देती है, मन में एक इन्द्रधनुष खुद–ब–खुद
मेरे हिस्से का आकाश, सच में बेहद सुन्दर हैं!

स्निग्ध कोमल ह्रदय,
बरबस ही, उलझा लेता है,
पलकों के कोरों में,
स्निग्ध विचारों का, रेशा–रेशा,
एक नयी खुशबू, स्वप्नों को रंग देती–आकंठ,
मेरे हिस्से का 'मैं', सच में बेहद सुन्दर है !

अवनि प्रकाश श्रीवास्तव
स्नातकोत्तर शिक्षक (गणित)
केन्द्रीय विद्यालय, वाहन निर्माणी, जबलपुर

15
अभिशप्त

मैं एक वीरान रास्ते पर बढ़ गया हूँ;
कई मील।
फल वाले, छाया वाले घने पेड़,
छोटी छोटी झाड़ियाँ, मीठे पानी के सोते,
मख़मली घास के मैदान,
सब छूट गए हैं बहुत पीछे।

मैं डरता हूँ वीराने से।
पीछे लौट जाना चाहता हूँ,
उन्हीं घास के मैदानों में,
उन्हीं फल वाले, छाया वाले पेड़ों के पास।
जब भी मेरे कानों में बहुत दूर से
किसी चिड़िया की आवाज़ पड़ती है।

पर मंज़िल का लालच,
स्वयं को साबित करने की उत्कट अभिलाषा
मुझे खींचती रहती है अपनी ओर।
कभी मेरी बुद्धि हृदय पर
और कभी हृदय बुद्धि पर हावी रहता है।
मैं कह नहीं सकता कि पिछले कई दिनों से
मैं किस ओर बढ़ा हूँ या घटा हूँ।

मंज़िल मुझे दिखती है, पास ही
ऐसा नहीं है कि मैं हमेशा से ही इधर आना चाहता था
न! न! न!
यह कोई सोच समझकर लिया गया फ़ैसला थोड़े ही है।
मैं तो चल पड़ा था यूँ ही
खेल–खेल में
नहीं जानता था कि
जितना ही दूर होता जाऊँगा
पेड़ों से, स्रोतों से
वे मुझे खींचेंगे उतनी ही ज़्यादा ताक़त से
अपनी ओर।

ज्यों ज्यों नज़दीक आएगी मंज़िल
एक–एक क़दम बढ़ाना भारी हो जाएगा
प्यास लगेगी गले को सुखाती हुई
धूप झुलसाएगी, हर क्षण और अधिक
तब बहुत याद आएँगे
वे पेड़, वे सोते।
पर क्या मैं लौट पाने की स्थिति में होऊँगा?

धर्म नारायण
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, कड़प्पा
(कर्नाटक)

16
पानी की बात

आओ पास बैठें
पानी की बात करें
जीवन की बात करें।

चुग गया है पानी
आकाश में पाताल में
नदियों में झीलों में
तालाब पोखरों में।

सूख गया है धरा के
ऊपर का पानी
अन्दर का पानी
प्राणघातक हो गया है
जहर घुला पीने का पानी।

और तो और
लुप्त हो गया है
भव्य भवनों में
संवेदना का पानी
आपस के व्यवहार में
सद्भावना का पानी।

नहीं बची रिश्तों में गर्माहट।
मर गया मनुष्य की
आँखों का भी पानी
फिर भी मन के किसी कोने में
गीलापन अभी बाकी है।

मानवता की कोख में
आत्मीयता अभी बाकी है।

चलो नई सदी की धूप में
चाँद तारों की साक्षी में
तेरा पानी मेरा पानी की
कलह से ऊपर उठकर
सबके लिए पानी की बात करें।

आओ पास बैठें
पानी की बात करें

डॉ. मेधा उपाध्याय
उप–प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय
एएफएस, हाई ग्राउंड्स,
चंडीगढ़

17
सच्चा विद्यार्थी

विद्या पढ़कर अर्थ गृहण करे
वही विद्यार्थी कहलाता।

नियम पालन मन, वचन, कर्म से करता
वही फलित जीवन पाता।

अहम् भाव त्यागकर
सबको शीश झुकाता।

गुरुजनों की आज्ञा मान
सर्वगुण संपन्न बन जाता।

जो जितना कठिन तप करता
वो उतना आगे बढ़ जाता।

जैसे अग्नि में तपकर सोना
और चमक पा जाता।

परिश्रम ही मूलमंत्र है जीवन का
जो भी यह जान जाता।

कोई कठिनाई न आए रस्ते में
जीवन स्वर्ग बन जाता।

नित मेहनत कर–कर के
आगे कदम बढ़ाता।

परहित और देश कल्याण से
कभी न जी चुराता।

रवीन्द्र कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर–3 रोहिणी, दिल्ली

18
जग की हालत

विचलित हुआ है मन मेरा
जग की हालत को देखकर,
प्रत्येक व्यक्ति होड़ में है
सहयोग भाव को भूलकर,
स्वार्थ सिद्ध करना है बस
दूसरों के कष्ट की परवाह नहीं,
दुखी हुआ है मन मेरा, जग की हालत देखकर।

भ्रष्टाचार के सब साथी हैं
जो चले, उचित मार्ग को त्यागकर,
दो रूप धारण किए हैं
जो जिएं, आत्म को भुलाकर,
हासिल करनी है सफलता बस
साधन उचित हो या नहीं,
व्यथित हुआ है मन मेरा
जग की हालत देखकर।
जग की हालत को देखकर। ईर्ष्या, द्वेष से भरे हृदय हैं
प्यार प्रेम को छोड़कर,
हैवानियत पर सवार हुए हैं
मानवता को भुलाकर,
रहना नहीं यहाँ मुझे
जहाँ मानव, अब मानव नही, पीड़ित हुआ है मन मेरा
जग की हालत देखकर,
विचलित हुआ है मन मेरा, जग की हालत देखकर।

दिव्या
पी.आर.टी.
केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर–3 रोहिणी,
दिल्ली

19
जल की व्यथा-कथा

मैं जल हूँ, मैं जीवन हूँ, मैं हूँ जीवन आधार
मुझसे ही है ज़िंदगी, मुझसे ही संसार ...
भूतल में मैं छुपा हुआ वर्षों से ही सोया हूँ,
पर अस्तित्व पे छाया संकट इसीलिए रोया हूँ,
गर तुम चाहो, मैं जी सकता, जीवन दे सकता हूँ,
तुम मुझसे, मैं तुमसे हूँ, इसीलिए कहता हूँ
इसीलिए कहता हूँ, इसीलिए कहता हूँ..
मैं जल हूँ ....

तुमने काटे वृक्ष और जंगल, तुमने की बर्बादी,
सूखे पेड़ व सिमटे जंगल, और बढ़ी आबादी,
फ़ैल रहे कंक्रीट के जंगल, जीवन जल सूखता है,
हाय ! तेरी करनी पे ये दिल, बार बार दुखता है,
जार जार रोता है ये दिल, जार जार रोता है
मैं जल हूँ ....

अब भी संभलो मनुज कहीं ना, इतनी देर हो जाए,
बूँद बूँद जल को तरसो तुम, प्यास भी बुझ न पाए,
वृक्ष लगाओ अन्न उपजाओ, रोको भूमि का क्षरण
वन ज़मीन बच पायेगा तब होगा जल संरक्षण,
तब होगा जल संरक्षण, जीवन जल का संरक्षण
मैं जल हूँ ..

जल को यूं ना नष्ट करो, कीमत इसकी पहचानो,
सृष्टि की अनमोल धरोहर, बात सदा ये मानो,
ये अमूल्य है इससे होता, जीवन का श्रृंगार
जल जमीन संरक्षण से, संरक्षित हो संसार
संरक्षित हो संसार, संरक्षित हो संसार
मैं जल हूँ, मैं जीवन हूँ, मैं हूँ जीवन आधार,
मुझसे ही है ज़िन्दगी, मुझसे ही संसार।

नीना बख्शी
संगीत शिक्षिका
केंद्रीय विद्यालय, भुरकुंडा
(झारखंड)

20

शोक – काव्य

क्यों
उसके पैरों को
तुम घृणा की नजर से
देखते हो,
क्या !!
उसके पैर
मात्र घृणा के पात्र हैं?
नहीं!!
उसके पैरों में पड़ी
असंख्य बिवाइयां
गवाही देती हैं–
उस पर हुए
असहनीय अत्याचारों की
जिसके बदले
उसके मुंह से आह तो नहीं निकली
परंतु
एक बिवाई और फट गई।
उसके पैर यों लगते हैं
मानो,
समग्र जीवन की
विषमताओं को
परिलक्षित करने वाला
शोक– काव्य हो।

डॉ राजेंद्र सिंह
स्नातकोत्तर अध्यापक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय, धर्मशाला कैंट (हिमाचल प्रदेश)

21
जीवन आधार

मन के दीपक में, ज्ञान की ज्योति जलाएँ,
श्रद्धा से मंगलदीप जलाकर, ज्ञान का प्रकाश फैलाएँ।

मन के भेद भावों को मिटाकर, समभाव को अपनाएं,
परोपकार जीवन में अपनाकर, प्रेम भाव को बढ़ाएँ।

विश्वशान्ति की भेरी बजाकर, शांति का पाठ पढ़ाएँ,
मानवता का उद्घोष कर, एकता की पताका फहराएँ।

वसुधैव कुटुंबकम का भाव फैलाकर, जग में मुस्कान लाएँ,
स्नेह की लौ प्रकाशित कर, प्रेम–प्यार से पावन पर्व मनाएँ।
सबके दुख–कष्ट मिटाकर, विश्व पटल पर शांति ध्वज फहराएं।

पूरी शक्ति और सामर्थ्य के साथ, धैर्य भाव को अपनाएँ,
मानवता, दयालुता, ईश्वर आस्था जैसे गुणों को हम अपनाएँ।

गिर कर उठे फिर उठ बैठें, छोड़ें न कभी अपनी आशाएँ
नई जिंदगी के लिए हमेशा, ज्योति पथ के गीत गायें।

नए रास्तों पर कदम बढ़ाकर, निरंतर आगे बढ़ते जाएँ
आशाओं के स्वप्न सँजोकर, हम श्रम की ज्योति जलाएँ।

सुसंस्कृति को आधार बनाकर, हम सृजन के नव दीप जलाएं
विश्व बने परिवार हमारा, इसी लक्ष्य को अपनाएँ,
युग की ख़ातिर जिएं सदा हम, चलो प्रीत के दीप जलाएँ।
सबके दुख–कष्ट मिटाकर, विश्व पटल पर शांति ध्वज फहराएं।

दीपिका पांडे
टीजीटी (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय, वायुसेना स्थल मकरपुरा, वडोदरा

22
हिंदी है सरल

हिंदी है सरल, हिंदी है सुगम
अब तक क्यों ना यह जाना
अपनाकर तो देखो इसको
होगा सब जग दीवाना
हिंदी है ....

जैसे बोलें लिखते वैसे
है वैज्ञानिक यह भाषा रे
शब्द किसी भी भाषा से
कर लेती समाहित यह सारे
हम सबकी उपेक्षा के कारण
हिंदी का पीछे रह जाना
हिंदी है ....

लगती सुंदर, दिखती सुंदर
ये सुंदरता की मूरत है
इस देश को आगे करने को
हिंदी की बहुत जरूरत है
हम सबके प्रयासों से सम्भव
हिंदी को आगे ले जाना
हिंदी है ....

मनोज शर्मा
सहायक अनुभाग अधिकारी
केन्द्रीय विद्यालय, हैप्पी वैली, शिलांग

23
पिता को समर्पित वह शाम

शाम तो रोज हुआ करती है, इस जहान में
बेटी के ब्याह की यादगार शाम, सिर्फ बाप समझता है, इस जहान में।

सूरज की पहली किरण के साथ हडबड़ाकर उठता है
शाम को इज्जत रह जाए, दुआ में बस यही पढ़ता है।

सिर पे आलू की बोरी, नंगे पैरों में छाले
आखें बयां करती हैं, दिल के छाले।

दहेज की रकम अगर नहीं जुटा पाता है
लड़की के बाप से पूछो, उस शाम वह कैसे छटपटाता है।

भीड़ में लड़की के बाप को पहचानना और भी आसान हो जाता है
समधी के पैरों में पगड़ी रख, हाथ जोड़ सिर्फ वही नज़र आता है।

भूखे पेट सो कर बेटी की शादी के लिए पैसे बचाता है
लेकिन बरातियों को उस खाने में स्वाद कहां आता हैं।

शाम ढलती है, चांदनी रात भी कुछ कहती है
मां–बाप से जुदाई का दर्द, कौन समझे, जो बेटी सहती है।

उस शाम का हर एक लम्हा जीवन भर का कर्जदार है
नमन उन लोगों को जो बेटी के ब्याह का भागीदार हैं।

अनूप कुमार निगम
सहायक अनुभाग अधिकारी
प्रशा. 2 अनुभाग, केविसं. (मु.)

24
सफ़र

सफ़र जारी है इसलिए ताउम्र चलते रहिए,
अपने दर्दो ग़म के मायने बदलते रहिए।

गिर जाने का ग़म करेंगे, तो छूट जाएँगे,
सहारा मिले न मिले खुद ही सँभलते रहिए।

फ़िज़ाओं की रंगत बदल गई है अब,
चलो किसी अंजान शहर में जाया जाए।

बच गई हैं जो यादें, सँजो कर रख लें,
आज उन्हें फिर से अश्कों में न बहाया जाए।

बहुत भीड़ हो गई है दर्दो ग़म के बाज़ार में,
अब किसी गम के मारे को न सताया जाए।

गुलशन में नाजुक फूल मुरझाने लगे हैं,
फिर उन्हीं गुलशन को बहारों से सजाया जाए।

नया सा सफ़र है, संग चलो, तुम्हारा साथ चाहिए
कहीं छूट न जाऊँ राह में, तुम्हारा हाथ चाहिए।

माना जीवन इतना आसान तो नहीं फिर भी,
नव जीवन पाकर जी उठूँ, ऐसा प्रभात चाहिए।

बहुत धूप है मुरझाने लगे हैं अब चमन के फूल
जो गुलशन को हरा कर दे, ऐसी बरसात चाहिए।

अब न मिलती है वो बिछड़ी यादों की कश्ती,
तुम फिर मिलो हमसे, फिर वो मुलाकात चाहिए।

सुनीता खरे
प्राथमिक शिक्षिका
केंद्रीय विद्यालय, चकेरी क्र.2, कानपुर

25

पहचानो खुद को

पंख हुनर के खोलो, परवाज़ करो परवाज़ करो
एक अनोखा तुम अपना, अंदाज़ करो अंदाज़ करो

हार के बैठे हो क्यों, तुम खुद से ही ये बोलो
बाहें फैलाकर तुम, एक ऊँची उड़ान भर लो
पांव धरो धरती पर, अम्बर पर नैन टिकाओ
आकाश झुकाने का, आगाज़ करो आगाज़ करो

मंज़िल के ओ राही, तुम हर दम चलते रहना
मुश्किल से भरी राहों में, हिम्मत का दम तुम भरना
हौंसला हो ऊँचा, चट्टानों से भी मन में
कठिनाइयां गिराए, हर बार उठो जीवन में
उम्मीद का दीपक अपनी, आँखों में जलाये रखना
खुद ही पहचानो खुद को, आवाज़ करो आवाज़ करो।

पंख हुनर के खोलो, परवाज़ करो परवाज़ करो
एक अनोखा तुम अपना, अंदाज़ करो अंदाज़ करो

शमसुन निसा
टी.जी.टी. (कला)
केंद्रीय विद्यालय, महराजगंज, बिहार

26

बच्चा

बच्चा वृक्ष के तने से सटा
पेंसिल से बना रहा है
उस पर चाँद–सूरज
कुछ ही देर में वह पकड़कर डाल
लटक जाता है उस पर
एक गिलहरी अपने पंजों पर उचककर
कुतर रही है पत्तों का पीलापन
बच्चे की उँगलियों में फँसी पेंसिल
अपना सिर ऊँचाकर
भर रही है आकाश में स्लेटी रंग।

डॉ. ऋतु त्यागी
पी.जी.टी. (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय, सिख लाईंस,
मेरठ छावनी

27

चल अकेला

अक्सर देखता हूं जब अपनी परछाई
तो सोचता हूं सिर्फ यही है जो हमेशा मेरे साथ आई।

कभी उसकी नजरों से देखा खुद को,
कभी अपने नजरिए से देखा उसको।

जब भी साथ बैठा और बतलाया
सबसे करीब उसको ही पाया।

जब सुख था तभी यह साथ थी
अब दुख है तब भी यह साथ है,
ऐसा लगा हमेशा से मैं हूं और यह मेरे साथ है।

जिधर मैं चला उधर यह चल पड़ी,
ऐसा लगा यही है जिंदगी की असली कड़ी।

जब जब सूरज सर पर चढ़ा तो यह मेरे आगे छोटी हुई,
पर ढलते सूरज में इसने किया मुझे बड़ा।

परंतु सच का सामना तो मैंने जब किया,
जब अंधेरा होते ही इस ने भी मेरा साथ छोड़ दिया।

तभी तो कहता हूं चल अकेला
मिथ्या है यह सब तेरे आसपास का मेला।

सिम्मी सिंह
टीजीटी (सामाजिक अध्ययन)
केंद्रीय विद्यालय, सिख लाइंस, मेरठ

28
वक़्त सशक्त है

संभव–असंभव को परिभाषित करता,
कल्पित–अकल्पित को प्रमाणित करता,
ज्ञान–अज्ञान को प्रकाशित करता,
वक़्त सशक्त है, वक़्त सशक्त है

स्मृति पटल को छायान्वित करता,
कर्म–पथ को कार्यान्वित करता,
उथल–पुथल को समन्वित करता,
वक़्त सशक्त है, वक़्त सशक्त है

मानस के प्रत्येक पटल पर,
घटनाओं को अंकित करता,
भविष्यत की चिन्ताओं से,
मन को कभी सशंकित करता,
वक़्त सशक्त है, वक़्त सशक्त है

शांत–अशांत की गहराई को,
सहज ही परिलक्षित करता,
हर्ष विषाद की सच्चाई को,
अनायास ही इंगित करता,
विचारों की संकीर्णता को,
पल में ही कभी भंगित करता,
वक़्त सशक्त है, वक़्त सशक्त है

स्त्रोत–लक्ष्य के संबंधों को,
समय के साथ उजागर करता,
पाप–पुण्य के चक्र को
प्रारब्धों से सनातन करता,
स्वयं के हर प्रवास को,
क्षण भर में पुरातन करता
वक़्त सशक्त है, वक़्त सशक्त है

कभी रुदन की है परछाई,
कभी खुशी की ये पुरवाई,
कभी कंटकों की रुसवाई,
कभी कलियों की यह तरुणाई,
अजब वक़्त के खेल तमाशे,
हर पल के संग वक़्त तराशे

कभी धूप की नीरस तपन,
जलती काया जलता मन,
कभी छांव के सुखद से क्षण,
शांत बयारें, शीतल पवन,
वक़्त के अजब रंग–ढंग हैं,
कहाँ वक़्त कब किसके संग है

स्वर्णिम यादों को स्मरित करता,
चिर–चिरंतन को स्थगित करता,
अभिलाषाओं के प्राप्य से,
जीवन को सदा अलंकृत करता,
वक़्त सशक्त है, वक़्त सशक्त है

कभी निराशा कभी है आशा,
यही वक़्त की है परिभाषा,
गुरुता का गौरव, लघुता का महत्व,
वक़्त से ऊपर, नहीं कोई तत्व,
वक़्त सशक्त है, वक़्त सशक्त

रविता पाठक
स्नातकोत्तर शिक्षिका (संगणक विज्ञान)
केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1, रीवा, (म.प्र.)

29

मानवता को बचाएं ज़रा-ज़रा

धरती हो उर्वर
हृदय भी हो उर्वर।
धरती हो शस्य–श्यामल
हृदय भी हो सद्भाव पूरित सरल।
धरती, आज सूख रही है
हृदय भी स्नेह–सुधा शून्य है।
क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा
इनसी निर्मित है धरणी माँ हमारी।
प्रेम–प्यार–मोहब्बत–सौहार्द
इनसे लबालब था कभी हृदय हमारा।
आज क्षिति जल सब है दूषित
हृदय भी स्वार्थपरता से है शंकित।
धरती थी महकती कभी अपने सौरभ–सुमन से
मानव सु–मन भी दहका करता था प्रेम–अगन से।
पूर्वजों के कर–स्पर्श से उर्वरित थी सुनहरी धरती
वंध्या भूमि बन संसार, खंडहर न बन जाएँ कहीं।
पूर्वजों से संस्कारित मन कहीं सूख न जाए, प्रेमभाव से विरहित हो।
आओ, धरती माँ को शस्य–श्यामल बनाए फिर एक बार
आओ, मन को भी प्रेम–सुधा–स्नेह–पूरित बनाए फिर एक बार।
आओ बचाएं हम धरती को ज़रा–ज़रा
आओ बचाएं हम मानवता को ज़रा–ज़रा।

पी. जयराजन
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय, वायु सेना स्थल मुत्तापुदुपेट, आवड़ी

30
आदर्श शिक्षक

समय से पांच मिनट पूर्व, पाठशाला पहुंचना।।
शिष्यों संग सस्वर, ईश वंदना करना।
विद्यार्थियों सहित स्वयं की, शांति एवं ज्ञान की दुआ मांगना।।
कक्षा शिक्षण से पहले, प्रकरण आत्मसात करना।
पाठ की आत्मा से, छात्र–छात्राओं को रू–ब–रू कराना।।
अध्याय की बात को, जीवन, परिवार एवं समाज से जोड़ना।
इस प्रकार सैद्धांतिक ज्ञान को, सरलतम व्यावहारिक बनाना।।
नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की बात, बच्चों से निकलवाना।
श्रवण, वाचन एवं लेखन, अभिव्यक्ति का रखता ध्यान।।
ये चार कौशल कहलाते, भाषा शिक्षण की है जान।
स्वयं से ज्यादा विद्यार्थियों को, पाठ शिक्षण में सक्रिय रखना।।
धरती पर हैं दो भगवान, मात–पिता है जिनका नाम।
उनकी सेवा नित्य है करना, आती दुआ जीवन में काम।।
ऐसी अच्छी–सच्ची बातें, करने का जो रखता ध्यान।
सहज सरल सुन्दर मृदु भाषण, सादगी समन्वित परिधान।
सब बच्चों पर नज़र घुमाकर, बात मन की जाए जान।।
जिस वेतन से परिवार पलता, उसके प्रति निष्ठावान।
ये सब गुण जिसमें विद्यमान, उसे 'आदर्श शिक्षक' जान।।

ओम प्रकाश गोस्वामी
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, मुज़फ्फरनगर (उ0प्र0)

31
जीवन - लक्ष्य

जीवन की अविच्छिन्न धार में,
बहते जीवन की क़तार में।
आया जब जीने का ढंग,
छोड़ गया तब यह मंजर।।

जीवन क्या है? समझ न आया,
मन–तृष्णा में ही भरमाया।
स्वप्न देख दौड़ा जिस सुख का,
सुख क्या है? समझ न पाया।।

किया विचार सूक्ष्म नज़रों से,
तब जाने जीवन के नख़रे।
मन की शंकाओं के उलझे,
जीवन के गूढ़ोत्तर सुलझे।।

कर्म करो निश्चिन्त हे मानव!
सुखानंद का भोग करो।
पर ध्यान रहे इतना जरूर,
मानवता का न गला घुटे।।

निज स्वार्थ हेतु न कर्म करें,
त्याग मार्ग पर कदम बढ़े।
निःस्वार्थ भाव से जन हित का,
जीवन में अपना लक्ष्य धरे।।

राष्ट्र–हितों की वेदी पर,
तृष्णा की आहुति कर डालो।
विश्व मनुजता संकल्प हेतु,
तुम अपना कदम बढ़ा डालो।।

मानव बनकर, मानव में;
मानवीय बीज बो डालो।
कर्तव्य–परायणता, न्याय, धर्म का
सद्भाव घोल डालो।।

बीज प्रस्फुटित होकर जब,
कल्याण भाव का निकलेगा।
रुग्णरहित मानव जीवन का
झंडा तब फहरेगा।।

धन्य तभी होगा जीवन,
जीवन का लक्ष्य समझ आएगा।
जब मानव, मानव विनाश का;
अणुबम नहीं बनाएगा।।

बलिदान भाव से विश्व पटल पर
श्रेष्ठ कृति तुम रच डालो,
हे मानव ! मानवता का तुम
जीवन लक्ष्य बना डालो।।

शुभम शेखर कटियार
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
केंद्रीय विद्यालय, क्र.3 चकेरी, कानपुर

32
मेरा घर मेरा संसार

मुझे बनाओ मत अपना सा
मुझको बस मुझसा रहने दो
तुम अपना घर महल बनालो
मेरा घर, घर सा रहने दो।

लक्ष्य तुम्हारा उच्च शिखर है
मेरा लक्ष्य तो मेरा घर है
तुम दुनिया को चले जीतने
मेरी दुनिया मेरा घर है।

सुबह सबेरे उड़ूं गगन में
और शाम को घर लौटूं मैं
मैं जहाज का पंछी भर हूं
फिर–फिर अपने घर लौटूं मैं।

तुम्हें मुबारक पांच सितारे
कॉन्टीनेंटल स्वाद निराले
मेरी क्षुधापूर्ति करती है
बच्चों के संग चार निवाले।

मैं संगत में चलने वाला
तेज गति से चल न सकूँगा
मंथर गति भी गति होती है
चलता हूँ चलता ही रहूँगा।

निरुपम कुमार गुप्ता
पी.जी.टी. (इतिहास)
केंद्रीय विद्यालय, बुलंदशहर

33
शहर आ गया गाँव में

है उदास पनघट पीपल की छाँव में
सावधान ! अब शहर आ गया गाँव में।
संसद के चर्चे होते चौपालों में,
ठगी आ गयी निश्छल बाल गोपालों में,
छल–प्रपंच का उठता धुआँ अलाव में ,
सावधान ! अब शहर आ गया गाँव में।।

चला गया वह गाँव का भोलापन प्यारा,
अपनापन वह प्यार और भाई–चारा,
है तेरा–मेरा प्रतिपल हर ठाँव में,
सावधान ! अब शहर आ गया गाँव में।।

चौराहों पर आज खुल गई मधुशाला,
फिल्मों ने जीवन आदर्श बदल डाला,
मीठा जहर घोलते गाँव गिराँव में,
सावधान ! अब शहर आ गया गाँव में।।

रहे नहीं जो थे तरुवर छतनार बड़े,
पाते थे सुख शांति जहाँ पर खड़े–पड़े,
सिमट रह गई छाँव पेड़ के पाँव में,
सावधान ! अब शहर आ गया गाँव में।।

सँझवाती का दीप न चौखट पर जलता,
अब तो सिर का आँचल कन्धे पर ढलता,
छलने को पछुआ बयार' है दाँव में,
सावधान ! अब शहर आ गया गाँव में।।

डॉ. आनन्द कुमार त्रिपाठी
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय, आयुध निर्माणी, नालन्दा (बिहार)

34
मैं जिन्दगीं को इस कदर जिये जा रहा हूँ

मैं जिन्दगी को इस कदर जिये जा रहा हूँ,
कोशिश नहीं करता उसे समझने की,
बस उसके सुन्दर सपनों को जिये जा रहा हूँ।

कोशिश नहीं करता उसे समेटने की,
बाहों को फैलाकर खुलकर साँस लिये जा रहा हूँ।,
कोशिश नहीं करता अन्दर ही अन्दर घुटने की ,
एक युद्ध जो चल रहा मन में, उसे विराम दिये जा रहा हूँ।,

अब कोशिश नहीं करता खुद को दबाने की,
अब खुद में आत्मविश्वास जगाये जा रहा हूँ,
अब कोशिश नहीं करता खुद से जूझने की,
सब उस पर छोड़े जा रहा हूँ,
जो खुशियॉ नहीं मिलीं, कोशिश नहीं करता उन्हें पाने की,
बस नए सुन्दर पथ का लुत्फ उठाये जा रहा हूँ,
अब कोशिश नहीं करता रिश्ते जोड़े रखने की,
बस हर हाल में अकेले मुस्कुराए जा रहा हूँ,
मंजिल तक पहुंचने की जल्दी नहीं,
हर पल का आनंद लिये जा रहा हूँ,
मैं बस जिन्दगी को इस कदर जिये जा रहा हूँ।

शिवलाल सिंह
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय
रिजर्व बैंक नोट मुद्रण, सालबोनी

35
किताब

हाँ मैं किताब हूँ, दुनिया के सारे सवालों का,
मैं ही तो जवाब हूँ, हाँ मैं किताब हूँ

गीता हूँ, गुरूग्रंथ हूँ
बाइबिल और कुरान हूँ
भूत, भविष्य, वर्तमान हूँ
भौतिक, रसायन और जीव का विज्ञान हूँ
शून्य, अंक, दशमलव हूँ
भूगोल, राजनीति और समाज का विज्ञान हूँ
हाँ मैं किताब हूँ, दुनिया के सारे सवालों का,
मैं ही तो जवाब हूँ, हाँ मैं किताब हूँ

धर्म हूँ, संस्कार हूँ
ज्ञान का भंडार हूँ
मुझे जान लो तो सार हूँ
न जानो तो बेकार हूँ
पौराणिक हूँ, नवीन हूँ
अवशेष हूँ, अविष्कार हूँ
हाँ मैं किताब हूँ, दुनिया के सारे सवालों का,
मैं ही तो जवाब हूँ, हाँ मैं किताब हूँ

किसी ज्ञानी के कलम से लिखी हुई
उसके ज्ञान का विस्तार हूँ
अज्ञानता को मिटाने वाली
उस प्रकाश का प्रसार हूँ
नीरसता को सरस बना दे,
मैं वही बदलाव हूँ
हाँ मैं किताब हूँ, दुनिया के सारे सवालों का
मैं ही तो जवाब हूँ, हाँ मैं किताब हूँ

पूछो उस विद्वान से, जो दुनिया में नाम कमाया है
क्या मेरे बिना भी वो संभव हो पाया है
जिस किसी ने मुझे अपने हाथो में उठाया है
शांति, समृद्धि और सम्मान ही पाया है
मेरा कोई अंत नहीं
मैं तो केवल शुरुआत हूँ
हाँ मैं किताब हूँ, दुनिया के सारे सवालों का
मैं ही तो जवाब हूँ, हाँ मैं किताब हूँ

अनिता कुमार
लाइब्रेरियन
केंद्रीय विद्यालय
एन.टी.पी.सी., बदरपुर, दिल्ली

36
गीतिका

मार भगाता है जो अपने, अंदर के शैतान को।
वही प्राप्त कर पाता केवल, जीवन में भगवान को ।।1।

पद पैसे की शक्ति अनोखी, होती जिसके पास में,
रोक नहीं पाता है वह भी, जीवन के अवसान को।।2।।

सर्वश्रेष्ठ प्राणी की पदवी, बस मानव को प्राप्त है,
भुला दिया है मद में उसने, भीतर के इंसान को।।3।।

बनकर रक्त धमनियों में नित, होता धर्म प्रवाह है,
यदि उन्नति की इच्छा है तो, अपनाओ विज्ञान को।।4।।

ध्यान नहीं देती है दुनिया, अंतर्मन की पीर पर,
सुख की सभी कसौटी मानें, चेहरे की मुस्कान को।।5।।

भव बाधाएँ मिट जाती हैं, रोग – शोक सब दूर हों,
पूर्ण भक्ति से भजकर देखो, राम भक्त हनुमान को।।6।।

प्राप्य सभी संसाधन प्यारे, यदि करते उपभोग हैं,
तो फिर हृदय बसाना होगा, अपने हिंदुस्तान को।।7।।

डॉ. बिपिन पाण्डेय
पी.जी टी. (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय, क्रमांक–2
रुड़की (उत्तराखण्ड)

37

शिक्षाक हूं मैं

शिक्षक हूं मैं,
पथ प्रदर्शक हूं मैं,
मात्र दर्शक नहीं,
मार्गदर्शक हूं मैं।

नई तूलिका से प्रतिदिन नए चित्र बनाता हूं मैं,
नए राग को नित नए स्वर–नए छंद में गाता हूं मैं,
अपनी शाश्वत संस्कृति की पोषक उर्वरा धरती पर,
जीवन–शक्ति की चिरंतन गति में धारा बहाता हूं मैं।

शिक्षक हूं मैं,
स्नेह–ज्ञान–मानवता का संदेश जन–जन तक पहुंचाता हूं मैं,
प्रतिभाओं का अंकुरण कर अज्ञानता का तम मिटाता हूं मैं,
जाति–धर्म–संप्रदाय–भाषा–प्रदेश के भेद मिटाकर,
समरसता–सहिष्णुता–समभाव से जीना सिखाता हूं मैं।

शिक्षक हूं मैं,
सूरज, चांद, चांदनी औ तारे धरती पर लाता हूं मैं,
बच्चों के सपनों से धरती को स्वर्ग बनाता हूं मैं,
फिर चाहे आंधी तूफान हो बिजलियां हों,
काले मेघों से रश्मियाँ चुन–चुनकर,
राष्ट्र प्रेम की अलख जगाकर जीवन उज्ज्वल बनाता हूं मैं।

शिक्षक हूं मैं,
पथ प्रदर्शक हूं मैं,
मात्र दर्शक नहीं,
मार्गदर्शक हूं मैं।

मीता गुप्ता
स्नातकोत्तर शिक्षिका (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय,
पू. रे., बरेली (उ0प्र0)

38

ग़ज़ल

प्यार तो सब करतें हैं पर, निभाता कोई कोई,
दिल लुटाये हर कोई, जान लुटाता कोई कोई।

दोस्तों का जिक्र करूं तो बात जायेगी दूर तलक,
कष्ट में साथ खड़े सब, दुख मिटाता कोई कोई।

हर गली में गुरू बैठें हैं दबा के फ़न लाखों का,
बाहर की गलती सब कहते, सिखाता कोई कोई।

धर्म ने आज हमें यह क्या सिखाया है या मौला,
आग तो हर एक लगा दे, बुझाता कोई कोई ।

कौन पढ़ता है मन से पाठ तेग बहादुर जैसा,
छांव लेना सब चाहें पेड़ उगाता कोई कोई।

शैख़ जी का अल्लाह ही हाफिज़ समझ अब तू राही,
नरक का देते डर ज़न्नत, दिखाता कोई कोई।

हरजीत राही
सहायक अनुभाग अधिकारी
केन्द्रीय विद्यालय
3–बी. आर.डी., ए.एफ.एस. चंडीगढ़

39

नयापन

नई उम्मीदें, नई भावना
नये नये अरमान लिये
नई खोज में, नये जगत में
एक नया अभियान लिये।

नई रीत में नये गीत में
भावों का उद्यान लिये
नये समय में नये गाँव में
नया सा एक आह्वान लिये।

नई धूप की नई सुबह में
नई–नई पहचान लिये
नये पंथ की नव पगडंडी पर
अस्तित्वों का भान लिये।

रौशन हो रही हैं राहें
जीवंतता से भरी मुस्कान लिये
छोटी सी किंतु ओजस्वी मेरी
इच्छाओं का मान लिये।

संकल्पों ने फिर ली अंगड़ाई
छोटी सी छवि की शान लिये
चलने लगी मैं नवपथ पर
मन में उल्लास का गान लिये।

रंजना सिंह
पीजीटी (जीव विज्ञान)
केंद्रीय विद्यालय, बैकुंठपुर

40
फिर से सम्मान दिलाना होगा

मैं बैठा हुआ था चौक पर
नज़र गयी एक कोख पर
तीन बरस का था बच्चा
और पन्द्रह बरस की माँ

आँखों के सपनों में दिखी खेलने की चाह
मजबूर हृदय न समझे, जज्बातों की आह

न जाने समाज पर कौन सी मुसीबत आती है
छोटी सी उम्र में ही शादी कर दी जाती है

गला घोंट दिया जाता है, बेटी के अरमानों का
क्या यही धर्म है? हम बुद्धिजीवी इंसानों का

यही सोचते–सोचते मैंने उसको अपने पास बुलाया
सहमी हुई आँखों को रिश्ते का विश्वास दिलाया

रिश्तों की ये सुनकर बात, मुँह उसने खोल दिया
कैसी बीती मुझ अबला पर झट उसने बोल दिया

पति मेरा नशे का आदी, दुःख किसे बतलाऊं मैं
सास ससुर जी मारे ताने, दहेज़ कहाँ से लाऊं मैं

इतने दुःख हैं इस औरत पर, कौन मिटाने आएगा
पापियों की धरती को अब स्वर्ग कौन बनाएगा

जन्नत चाहते हो यदि तो फिर एक वचन निभाना होगा
स्त्रियों को खोया सम्मान, फिर से उन्हें दिलाना होगा।

रमेश कुमार
स्नातकोत्तर अध्यापक (गणित)
केंद्रीय विद्यालय, बेंगडुबी

41
भूमंडल के पालनहार

जीवन वाटिका से बीन–बीन कर, कुछ लाया हूँ
भावों का सुन्दर एक उपहार
ताकि अर्घ्य चढ़ाऊँ तुझपर
हे! भूमंडल के पालनहार।

यह सुन्दर सृष्टि तेरी सर्जना
और नील गगन की मेघ गर्जना
तुझसे ही वर्षाजलधार
हे! भूमंडल के पालनहार।

अद्‌भुत तेरी जग की माया
किसी को धूप और किसी को छाया
तू भाग्यविधाता फल का आगार
हे! भूमंडल के पालनहार।

मनभावों का सारथी तू है
पाप–पुण्य का पारखी तू है
तुझसे ही सब पथ गुलजार
हे! भूमंडल के पालनहार।

रंग–बिरंगी दुनिया तेरी
तूझसे ही बजती रणभेरी
तुझसे ही होता हुंकार
हे! भूमंडल के पालनहार।

लाया हूँ निर्मल एक अर्धय
मिल जाए सबको पुण्य पथ्य
हो जीवन में मृदुल–वसंत बहार
हे! भूमंडल के पालनहार।

पशुता का पाश खंडित हो जाए
अद्‌भुत ज्ञान मंडित हो जाए
करें सभी मंगल किलकार
हे! भूमंडल के पालनहार।

सचराही को सत्कार मिले
पाखंडी को चित्कार मिले
नीर–क्षीर विवेकी तू न्यायकार
हे! भूमंडल के पालनहार।

बस सहजानन्द की यही पुकार
हो सदाचार की जय–जयकार
तू ही तो है मंगलमूर्ति, सुन्दर जीवन का रचनाकार
हे! भूमंडल के पालनहार।

सहजानन्द कुमार
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, टाटानगर (झारखण्ड)

42

मन

संस्कारों की टूटी माला,
कुंठित हुई ज्ञान की धारा।
नयनों का अब नीर मर गया,
जीवन सारा स्वार्थ से हारा।

अंदर से मन हुआ खोखला,
मानव खुद से हुआ बेगाना।
माँ से हुआ पराया बेटा,
मन, नित अपनापन खोता रहता।

मन का अनुगामी यह जीवन प्यारा,
कहाँ गया संस्कार बेचारा?
संस्कृति का नित अवसान हो रहा,
मन का विवेक से रण हुआ सदा।

आओ हम संस्कृति के बीज बोएं,
संस्कारों की नित फसल उगाएं।
मन पर विवेक की लगाम लगाएं,
प्यारे भारत को फिर स्वर्ग बनाएं।

हम राम, कृष्ण के वंशज हैं,
आर्यों की संतान आर्यावर्त के वासी हैं।
हम कलियुग से कभी न डरेंगे,
स्वर्णिम अतीत से भविष्य लिखेंगे।

आओ घर–घर संस्कृति गान करें,
हर मन में संस्कार भरें।
विश्व गुरु फिर भारत हो,
मन संस्कारों का स्वामी हो।

शोभा दीक्षित
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका
केंद्रीय विद्यालय, अलीगंज, लखनऊ

43

बेटियाँ

उन टेढ़े मेढ़े रास्तों पर चलती हुई
अपनी चाह की उड़ान भरती
कभी गिरती कभी संभलती
फिर भी हँस कर आगे बढ़ती हुई।

कभी शिक्षिका कभी पायलट बन जाती
अपने हौंसले से सबको एक नयी दिशा दिखाती
हर मुमकिन कोशिश करती
क्षितिज को छूने की चाह में बढ़ती हुई।

हर मुश्किल से लड़ती वो आगे को बढ़ती
आसमां के ऊपर जाकर मुसकुराती
गुरूर में सिर उठाकर जीना सिखाती वो
नाज़ सभी को उन पर है जो बेटियाँ
हर पल एक मिसाल बन जाती।

सीमा शर्मा
वरिष्ठ सचिवालय सहायक
बजट अनुभाग
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मु0)
नई दिल्ली

44

शिक्षक:दीपक की रोशनी

मेहनती हँसमुख खिलखिलाता वो चेहरा,
मनोरंजक तरीके से तकनीकियों को आसान बनाता।
नयी नयी बातें रोज हमें सिखाता,
नैतिकता से परिपूर्ण स्वभाव से प्यारा
क्षितिज को छू लेने की प्रेरणा दिखाता
दौड़ता भागता सबको प्यार से बुलाता
मुस्कुराहट बिखेर कर हमारी गलती समझाता
सपनों को पूरा करने की नयी उम्मीद जगाता
बड़ी बड़ी मुश्किलों को पल में सुलझाता
हर परिस्थिति पर खरा उतरता वो धैर्यवान
हर सुबह एक नयी उम्मीद जगाता
हर प्रश्न का जवाब कुछ इस अंदाज़ में देता
कि नयी उमंग सबके दिल में भर जाती
और कुछ कर गुजरने की शिद्दत मन में जग जाती
शत शत नमन है आपको आप वो शिक्षक हैं
जिनके प्रकाश से हमारी दुनिया में रोशनी है।

रुद्रपाल सिंह परिहार
वरिष्ठ सचिवालय सहायक
प्रशासन –1/सी सी पी यूनिट,
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मु0), नई दिल्ली

45
दोस्त

केवल शब्द नहीं
एक एहसास एक ख्वाब एक बंधन एक डोर
किसी धागे से किसी अपेक्षा से नहीं
बंधी है बस विश्वास से संवेदनाओं से

दोस्ती में दो जन हो जाते एक हैं
विश्वास टूटे गर साथ छूटे
रह जाए मध्य एक अधूरा इक शून्य
इस लिये कृष्ण ने सुदामा और द्रोपदी को सखा बनाया
दो शब्द स्वयं में परिपूर्ण कुछ अधूरा नहीं

शिशु की प्रथम दोस्त मां
नाल से जोड़ा खून से सींचा,
नजर से दूर पर तन से जुड़ा प्यार से सींचा
निस्वार्थ भाव से जग में लाए
दोस्ती का अर्थ समझाए,
उंगली थाम फिर चलना सिखाए
हर कमी हर गलती अपनाए
दे अपनी ओट हर तुफां से बचाए
जीने की कला सिखाए
हर ख्वाहिश अपनी कर दे कुरबान
पिता बन हर फर्ज निभाए
दोस्ती का अर्थ समझाए।

उनके संग हर हंसी ठिठोली
उनके संग लड़ना झगड़ना उनके संग हठबोली
बातों में बुढों सी फटकार पर गलती पर बरसाए प्यार
नाराज हों पल में रूठे को मनाएं, मायूसी में मन को गुदगुदाए
भाई बहन के अनूठे बंधन जीवन को परिपूर्ण बनाए
दोस्ती का अर्थ समझाए।

जीवन की भागदौड़ में समय की होड़ में
जब अपने हो जाएं दूर
एक अधूरापन एक शून्य रह जाए
फिर इक दोस्त की तलाश में आंखें पथराएं
कोई हो जो दोस्ती का अर्थ समझाए।

हर पग में मिलते मित्र
बस परखो कौन पराया कौन सगा
पाठशाला क्रीड़ाशाला नृत्यशाला मधुशाला
हर दरवाजे के भीतर मिलेंगे मित्र आला
किसको रखें जेब में किसको चुपके से खिसकाएं
किसको दोस्ती का अर्थ समझाएं।
''चेहरे की किताब'' और ''क्या चल रहा ''
''चहचहाना'' ये सब नए सामाजिक दोस्ती के अड्डे
कोई बद्तमीज कोई खद्दर की कमीज
कोई बतियाये बहुत कम कोई बातों की खान
अपनी अपनी जगह हर एक है दिल को अजीज
पर जो अपेक्षाओं से दूर आशाओं से हो भरपूर
अंधेरे में जुगनू सा धूप में ममता की छांव सा
आंखों में तैरते ख्वाब सा बरखा में नाचते मोर सा

गरजे बिजली तो सुरक्षित आलिंगन सा
जिसकी आंखों में हो वफा लब पर रहे हर पल दुआ
ना हो चाहे हाथों की लकीरों में
चाहे नदी के दो अलग किनारों सा
पर जब तक अस्तित्व रहे, चले हर पल साथ
दूर हो चाहे कितना पर ख्यालों में रहे बसा
याद आने पर हिचकियों से सताए
वो जो दोस्ती का अर्थ समझाए।

पर ये सब महज किताबी बातें
खुद में खुदा बसता है उससे ही सच्चा राबता है
अपनी मुस्कुराहटों पर सदा रहो कुर्बान
क्यूंकि जान है तो दोस्तों से भरा जहान
खुद सच्चे तो हर कोई
दोस्ती का अर्थ समझाए।

उर्मिला रावत
वरिष्ठ सचिवालय सहायक
भर्ती, पदोन्नति एवं वरिष्ठता अनुभाग
केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मुख्यालय)

46
जन्म दे हे! जननी

शिवे, कल्याणी,
अजन्मी कन्या का।
सुन आर्त्त पुकार,
करुण क्रन्दन,
तव कोमल 'भ्रूण–शिशु' का ।।1।।

प्रभु का वरदान हो साकार,
तज पूर्वाग्रह का पारावार।
परम्परा की तोड़ श्रृंखला,
धारण कर अभेद्य मेखला।
आज दिखा शक्ति अपनी,
जन्म दे हे! जननी ।।2।।

कोमल ममता भीतर समेट,
दृढ़ निश्चय की चट्टान ओट।
पाकर शिक्षा तब मर्यादा की,
साहस की सगुण निपुणता की।
तब सुता बन हम,
सुरभित कर दें घर–आँगन।।
बची रहे संस्कृति अपनी,
जन्म दे हे! जननी।।3।।

गार्गी, मैत्रेयी, लक्ष्मी, हाड़ी रानी,
न बैठी रहीं वह बनी–ठनी ।
'माँ' पा जायें तेरा दृढ़ सम्बल,
'पुत्री' नर–पिशाचों में बनें न निर्बल।
निज छवि क्यों न पहचानी,
जन्म दे हे! जननी ।।4।।

'माँ' तेरे स्निग्ध मातृत्व की आकांक्षा,
अस्तित्व हमारा रहे,
जिन्हें है पुत्रों की वांच्छा।
शंखनाद कर दो दिग–दिगान्त,
कर देंगी हम,
अबला की पीड़ा का युगान्त।
ला मृदु हास,
मत बना सूरत रोनी,
जन्म दे हे! जननी ।।5।।

क्षुद्र सोच मानव को,
तेरी पुत्री के आगे झुकना होगा।
संयम सद्भाव धीरता संग,
दुर्गेशनन्दिनी का पग होगा।।
अनुगमन पिता का करना है,
भ्राता संग सहयोग।
सहधर्मिणी पति की,
वात्सल्य सुत को जीवन योग।।
मिला भावधारा,
पयधार में अपनी,
जन्म दे हे! जननी ।।6।।

माँ! तू है सदैव सहनशीला,
फिर कैसे आज बनी प्रतिकूला।
प्रतिष्ठित कर तव प्रतिकृति,
सतत सुरक्षित हो मानव–संसृति?
रोक दे! क्रूर हाथ की करनी,
जन्म दे हे! जननी ।।7।।

जन्म दे हे! जननी।।
जन्म दे हे! जननी।।

दिलीप विद्यानंदन
पीजीटी (हिंदी)
केन्द्रीय विद्यालय, नाभा छावनी (पंजाब)

47

यादों का कारवाँ

रफ्ता रफ्ता कारवाँ रिश्तों का खो गया
सिसकियाँ लेते हुए कल सब में सो गया

दुलार वो दादी का कुछ नानी की कहानियाँ
जिंदा थे जिनमें कितने राजा और रानियाँ
लगता है कोई ख्वाब था बोझिल जो हो गया
सिसकियाँ लेते हुए कल...

चाचा की चाह वो मेरे ताऊ की हसरतें
कायम नहीं थी उनकी नज़रों में नफरतें
कितना हँसी समा था क्यूं जाने खो गया
सिसकियाँ लेते हुए कल...

ममता भी आज सहमी और बेबस सी हो गई
खुदगरजी के आगोश में कायनात सो गई
सैलाब अश्कों का मेरे चेहरे को धो गया
सिसकियाँ लेते हुए कल...

घर का पता तो एक पर किसी का पता नहीं
ये वक्त का अंदाज है कोई खता नहीं
उलफत भरा जो खत था रास्ते में खो गया
सिसकियाँ लेते हुए कल...

यारों की यारी ने लिए मतलब के रास्ते
यहा वक्त किसको जो रुके किसी के वास्ते
अंजान तन्हा तन्हा इन राहो में खो गया
सिसकियाँ लेते हुए कल...

नरेश कुमार अंजान
एस एस लैब
केन्द्रीय विद्यालय, नाभा छावनी (पंजाब)

48
देश प्रिय हो

देश प्रिय हो इस जीवन में, मोल नहीं किसी धन से हो।
स्वयं का होकर रहे नहीं बस, प्रेम सदा हर जन से हो।।

प्रियवर हो या हो वैरीजन, या करता कोई यशगान,
जग में कुटुम्बता बनी रहे, मिले सभी को ही सम्मान।
कारण जो भी हो जीवन में, कष्ट नहीं किसी तन को हो,
प्रेमी मन जैसे हो घर में, बिलकुल वैसे ही जगत में हो।।

कष्ट से कोई पीड़ित यदि हो, या फिर हो कोई भयभीत,
हाथ बढ़ाकर उससे बोलो, मैं हूँ यहाँ हे प्रियवर मीत।
चित्त–चेतना सजग रहे, हृदय ममता से परिपूरित हो,
पीड़ा यदि हो किसी तन में, उपचार प्राथमिक उसका हो।।

जैसे वसंत बासंती की, पर करती हर–हृदय का उद्‌गार ,
वैसे ही जीवन में सब कुछ, रहे सभी का बन आभार।
करुणा कलित हृदय में रज–बस, जाता जैसे दुःख में हो,
उसी हृदय बस कर तुम भी, प्रेम सरसता को भर दो।।

पंछी बिन पानी के चातक, करता नित जल का सत्कार,
बिल्कुल उस जल की ही भाँति, जग में हो जाये उपकार।
प्रेम भावना बनी रहे, जन–जन का फिर कल्याण हो,
आत्मदृष्टी में स्वयं का फिर तो, खुद से ही सम्मान हो।।

जल बरसाता मेघ घटा बन, लेता हर भू की पीड़ा,
जीव जंतु और वृक्ष तभी सब, कर पाते हरित–क्रीड़ा।
स्वयं को जैसे कर न्योछावर, कर देते फल का त्याग वो,
यही भावना बनी रहे, फिर तो जग का उद्धार हो।।

राकेश कुमार झा
टी0जी0टी0 (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, नाभा छावनी (पंजाब)

49
प्रेम

चाहे दुःख की घोर घटा हो
या असीम मस्ती के क्षण हों
अगर फिजां में प्रेम घुला है
हर एक पल सुख का मौसम है।

इक प्रपंच सी है ये दुनिया
अजब छलावे गजब तमाशे
शबनम में मोती दिखलाती
पीतल में सोना भरमाये
कहाँ वजूद को कोई तलाशे
महज मोहब्बत ही मरहम है
अगर फिजां में प्रेम घुला है
हर एक पल सुख का मौसम है।

जीवन एक बुलबुले का सा
ना होने को होनी माने
लिखी रेत में चंद लकीरें
जाने कब क्या है मिट जाने
इस प्रतिक्षण खोते जीवन में
प्रेम अकेला ही हमदम है
अगर फिजां में प्रेम घुला है
हर एक पल सुख का मौसम है।

परम सत्य अनबूझ पहेली
कैसे जाने क्या–क्या माने
कैसी पूजा कौन इबादत
खून के प्यासे हैं दीवाने
दरक, सरकती हैं तहज़ीबें
अब तो ज़ेहन भी बेदम है
अगर फिजां में प्रेम घुला है
हर एक पल सुख का मौसम है।

राजेश द्विवेदी
प्राचार्य
केन्द्रीय विद्यालय, एनटीपीसी
फरक्का

50

बढती जनसँख्या

जनसंख्या की तीव्र गति से, हो जाओ तुम सब सावधान।
इसके खतरे से बचने का, शुरू करो मिलकर अभियान।।

धरती माता का बोझ बढ़ा, नहीं है तुमको इसका ज्ञान,
सुनामी लहरों से जानो, कैसे ली लाखों की जान।।

पशु–पक्षी से संयम सीखो, तुम जीवों में हो बुद्धिमान,
नर–पिशाच सा काम करो, किस बात का करते हो अभिमान।।

पेट की भूख मिटाने के हित, इंसान बन गया है शैतान,
तंत्र–मंत्र की झूठी विद्या में, बच्चों का कर रहा बलिदान।।

नीला अंबर धूमिल है अब, हरियाली का मिटा निशान,
पानी–हवा प्रदूषित हैं सब, खतरे में है हर इंसान।।

भ्रष्टाचार का सिर ऊँचा तो, मंहगाई के नीचे दबी है जान,
फसल खेत में सूख गई तो, खुदकुशी करने लगा किसान।।

ऊँचे–ऊँचे भवन बनाकर, खत्म कर दिए हैं खलिहान,
भूत जो हँसता था अतीत में, उसका अब गायब है मचान।।

ठसक नवाबों की गायब है, बची हुई है झूठी शान,
बच्चे ग्रसित कुपोषण से तो, बेरोजगारी से युवा परेशान।
जनसंख्या की तीव्र गति से, हो जाओ तुम सब सावधान।।

अरविन्द कुमार,
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय, क्रमांक–2,
रुड़की (उत्तराखंड)

51

खूबसूरत माँ?

मेरी माँ खूबसूरत नहीं है
यह बात, हर वक्त मुझे सालती
बहुत प्यार, बहुत सीख देने वाली माँ की
बदसूरती, मुझे झकझोर डालती।

सुडौल, सुवर्ण फिल्मी माँ को देखकर
एक टीस मन पर छा जाती
काश, मेरी माँ भी ऐसी होती
तो जिंदगी संपूर्ण हो जाती।

माँ की सीरत पर फिदा
किसी अपने के यह कहने पर
'अपनी परछाई सी बहू लाना'
मैं चीख उठता मानों चोट खाने पर।

बहुधा माँ को भेद चुकी है, शूल
इन चुभते शब्द–बाणों की
'कल्पना भी नहीं कर सकता माँ
तुम जैसी पत्नी लाने कीं।

फिर भी माँ के लहराते आँचल में
हर क्षण खुद को पाता
उस स्नेह कवच के बंधन में
और निष्ठुर हो जाता।

माँ के कंधों पर चढ़कर
सफल शिखर आसमान पाया
फिर भी, माँ, तुम सुंदर नहीं हो,
कह–कहकर, जीवन भर उसे रुलाया।

वह दर्द सिक्तः मुस्कान
आज भी याद आ जाती है
जो तमाम ज़िल्लतों के बाद भी
मेरी बलायें ले जाती है।

उम्र भर की ठोकरों के बाद
यह बात समझ में आती है
माँ के पैरों में जन्नत है
चेहरे से ना सही,
हर माँ
दिल से खूबसूरत, बहुत खूबसूरत होती है।

आकांक्षा सेम्युएल
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय, क्रं–02,
जीसीएफ, जबलपुर, (म0प्र0)

52
एक संकल्प

कहीं से भी रोशनी की एक किरण ले आऊँगी।
लक्ष्य तक पहुँचने के पहले न टूटूंगी न मुरझाऊँगी।।

मेरे अनुगामी शिष्यों के पौरुष में है मेरा वास
आशा रंजित दृष्टि में है जीवन का सारा उल्लास
अदम्य विश्वास बन आँखों में सबकी मैं झिलमिलाऊँगी।
लक्ष्य तक पहुँचने के पहले न टूटूंगी न मुरझाऊँगी।।

जब दूं आवाज़ सुभावी को तुम भी स्वर अपना मिला देना
सपना साकार कर सकूँ कोई तुम अपने हाथ बढ़ा देना
है मेरा वादा यह तुमसे कि पग पीछे न हटाऊँगी।
लक्ष्य तक पहुँचने के पहले न टूटूंगी न मुरझाऊँगी।।

यत्न करना ही नियति है ध्रुव सत्य यह जान लो
कंटकों की राह पर चलना पड़ेगा मान लो
गिरने न दूँगी मैं तुम्हें संबल स्वतः बन जाऊँगी।
लक्ष्य तक पहुँचने के पहले न टूटूंगी न मुरझाऊँगी।।

है कौन जग में जो कभी असफल या हारा है नहीं
पर उठ खड़ा हो नए जोश से सफल राही है वही
बन प्रेरणा हर पल तुम्हारा मार्ग जगमगाऊँगी।
लक्ष्य तक पहुँचने के पहले न टूटूंगी न मुरझाऊँगी।।

दिखता जगत को लहराता परचम शिखर का
है सत्य समाहित योगदान सुदृढ़ स्तम्भ का
उज्ज्वल कीर्ति की तुम्हारी मैं ध्वजा बन जाऊँगी।
लक्ष्य तक पहुँचने के पहले न टूटूंगी न मुरझाऊँगी।।

सत्संकल्प और सत्प्रयास से जीवन–पथ हो आलोकित
प्रखर सूर्य से तुम चमको हो तेज तुम्हारा नित द्विगुणित
देने तुम्हें यूँ हौसला कण–कण में गुनगुनाऊँगी।
लक्ष्य तक पहुँचने के पहले न टूटूंगी न मुरझाऊँगी।।

दीप्ति सहाय
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय, गोमतीनगर,
लखनऊ (उ0प्र0)

53

केंद्रीय विद्यालय-"एक भारत श्रेष्ठ भारत" का दर्पण

कश्मीर से लेकर केरल तक जो एकता को अर्पित हैं
गुजरात से गुवाहटी तक जो श्रेष्ठता को समर्पित हैं
जो लहराते हैं परचम अपना खेल–ज्ञान–विज्ञान में
देश के हर कोने में वो केंद्रीय विद्यालय स्थित हैं।

बासठ में जो बीस थे, अब बारह सौ से ज़्यादा हैं
तक्षशिला का खालीपन भरने का जो वादा हैं
नालंदा के चाणक्य–से, तीस हज़ार हैं गुरु जहाँ
सूर्य की भांति भारत माँ के भाल पर जो अंकित हैं
देश के हर कोने में वो केंद्रीय विद्यालय स्थित हैं।

हर समाज हर वर्ग का, हर जाति हर धर्म का
हर भाषा हर आय का, हर पेशे हर कर्म का
फूल पिरोया है माला में, ज्ञान संजोया है शाला में
शिक्षा में हैं जो सर्वप्रथम और सम्पूर्ण व्यवस्थित हैं
देश के हर कोने में वो केंद्रीय विद्यालय स्थित हैं।

हिन्दी–संस्कृत–अंग्रेज़ी, जिसके हर छात्र की भाषा है
विज्ञान–कला–वाणिज्य के विद्यार्थी की अभिलाषा है
एक भारत श्रेष्ठ भारत का जो हैं उज्ज्वल–दर्पण
किरणें सफलता की जिनसे ब्रह्मांड में परिवर्तित हैं
देश के हर कोने में वो केंद्रीय विद्यालय स्थित हैं।

कदम हमारे थमेंगे जब शिखर पे पहुंचेगा भारत
लक्ष्य हमारे जमेंगे जब विश्व–गुरू बनेगा भारत
सदियों के ज्ञान–भण्डार पर, संस्कृति और संस्कार पर
आज भी हम पर बाकी के सारे भूभाग आकर्षित हैं
देश के हर कोने में वो केंद्रीय विद्यालय स्थित हैं।

विपिन कुमार मौर्य
प्र.स्ना.शि. (कार्य अनुभव)
केंद्रीय विद्यालय, क्र 2
शाहजहाँपुर (उ0प्र0)

54
इंसानियत का कोई मजहब नहीं होता

समुद्र, सागर, सरिता से जल प्राण लेकर।
घन घोर गगन, वात का अवलम्ब लेकर।
मंदिर का अभिषेक करता, मस्जिद का आहता साफ़ करता।
ऐ बादल! ये तो बता तेरा मजहब कौन सा है?

पुजारी की प्यास बुझाए,
मौलवी का गला तर कर जाए।
गुरुद्वारा में चरण सेवा करा,
धरा को सरसब्ज कर जाए
ऐ पानी! यह तो बता तेरा मजहब कौन सा है?

मजारों को महकता, मूर्तियों का श्रृंगार करता।
गुरुद्वारे का दरबार सजाता, अकीदत का फूल बन जाता
ऐ फूल! ये तो बता तेरा मजहब कौन सा है?

मुस्लिम तुझ पर कब्र बनाता, ईसाई भी तुझमें ही समाता।
हिन्दू आखिर में तुझमें विलीन हो जाता।
ऐ वसुधा! ये तो बता तेरा मजहब कौन सा है?

अल्लाह, राम, रहीम, वाहेगुरु, यीशु मसीह
सब नाम हैं तेरे, कहते हैं सब यह।
पर ऐ मेरे परवरदिगार! यह तो बता तेरा मजहब कौन सा है?

सोच कर यह मंदिर मस्जिद गिरजाघर दंग हैं,
हमें खबर ही नहीं और हमारे लिए हो रही जंग है।
हो रहा कत्ल इंसानियत का, बह रहा मानवता का, खून है।
ऐ बहते हुए रक्त! ये तो बता तेरा मजहब कौन सा है?

रक्त पिपासु, धर्मांध, मजहबी, खूब खेला मौत का खेल तूने।
अब तो मजहब से ऊपर उठ इंसान बन
क्योंकि इंसानियत का कोई मजहब नहीं होता।।

प्रीतम कुमार शर्मा
प्र.स्ना.शि.(हिन्दी)
केंद्रीय विद्यालय क्र.1
अजमेर, राजस्थान

55
ख़ामोश आदित्य

है क्षितिज पर आज उजाला, दूर व्यथा सब क्रंदन होगा,
घिर आये लो मेघदूत अब, तुमको घिसना चन्दन होगा।

अम्बर–अंचल की दृग संध्या में कुमकुम लिए आये कौन तुम,
संगम सागर की सुदूर धारा में उज्ज्वल धरा–सी मौन तुम।

करवट बदले बेकल–बदरिया, बावरा गगन बना अनजान,
निशा निमंत्रण लिए घटाएं, बरस रही रवि पर सुनसान।

नीलगिरी निस्तब्ध होकर, निहार रहा ये मलयज–आचार,
मृग फुदकती–ज्यों मरीचिका पर, विजन भास्कर है लाचार।

सिहर–सुजल से भरे अम्बुद–आँचल को चंचल–प्राची ने पकड़ा,
निज स्थूलता की जलधि ने मृदुल दिनकर को जकड़ा।

इस अथाह निषिद हृदय में अब न जाने क्या दिखाई पड़ता है,
प्रभाती बेला में घनघोर जंजाल, फिर क्यों मरीचि से लड़ता है।

इन संचित दृग अक्षय कोषो में, छलक रही है निर्मम पीर,
विषादमय अरुणोदय विषमता में उदित वसुंधरा भी अधीर।

मलय कुंतल के अन्धकार में आखिर कैसे तुम छिप जाओगे?
कौतूहलता से भर लो तिमिर, अरुण ऊषा रोक नहीं पाओगे।

इतराते इन चंचल अम्बुदर के कलित हृदय को सुनना होगा,
निरीह ऊषा की आशा में, ये खामोश आदित्य ही चुनना होगा।

कृष्ण कौशिक
प्र स्ना शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय क्रमांक –1, बोलांगीर

56
नदी पहाड़ों का सच है

अतिरिक्त समय में
मैं सोच रहा हूं
रिक्त नदी के बारे में
नदी जो कभी थी
अब नहीं है
सबकुछ है वहां
अनावश्यक विस्तार लिए
रेत के मैदान
रेत में धंसी जर्जर नाव
ऊपर से गुजरता लोहे का पुल
अनगिनत लोग–बाग
गाड़ियां–सवारियां
बस नदी नहीं है
नदी पहाड़ों का सच है
और शहरों का आश्चर्य
निर्जन बियाबान से गुजरती
उपेक्षित/सुरक्षित नदी
शहर से गुजरने पर
पूजी जाती है
आडम्बर से
उकताने लगी है नदी
ठिठक जाती है

दूर से शहर देख कर
जैसे चिंहुक जाती हैं लड़कियाँ
मोटरसाइकिलों के हार्न से
मुझे नहीं आता
शोक का बंटवारा करना
वर्तमान समय में
सिर्फ नदी का शोक कर रहा हूं
रिक्त नदी का

शोक पर शोक रख देने से
खो जाता है संताप
जैसे घुप्प अंधकार में
नहीं सूझता अपना ही हाथ।

परमानन्द
कला शिक्षक
केन्द्रीय विद्यालय, ए.एस.सी सेन्टर,
बेंगलुरु

57
सुनहरी सुबह

सुनहरी सुबह
पंछियों ने चहककर कहा
उठो, जागो, प्यारे बच्चों कि तुम्हें स्कूल बुला रहा है।

चुपके से ठंडी हवा ने
कपोलों को छूकर कहा
खिड़कियाँ खोलो जरा, देखो तुम्हें नजारा बुला रहा है

वो देखो, बादलों की रजाई में दुबका
सूरज भी कुनमुनाकर जाग गया है
तुम भी आलस छोडो नन्हे मुन्नों कि तुम्हें स्कूल बुला रहा है

पलकें उठाकर तो देखो सुन्दर बगिया को
रंग बिरंगी यूनीफार्म में सजकर
तितलियाँ भी पराग लेने चल पड़ी हैं
तुम भी चल पड़ो बस्ता लेकर कि तुम्हें स्कूल बुला रहा है

पन्ने फड़फड़ाकर कब से
तुम्हें जगा रही है तुम्हारी प्यारी कॉपी
कह रही, संग चलूंगी मैं भी,
छोड़ न देना मुझे घर पे अकेली
अरे रे मचल उठी है ये नटखट कलम भी,
नन्हें हाथों में आने को बेकल
लुढ़क ना जाए रूठकर उसे थाम लो तुम
लिख डालो अब इक नई इबारत कि तुम्हें स्कूल बुला रहा है

आओ कि बाहें फैलाकर खड़ा है
तुम्हारा अपना विद्यालय प्रांगण
गुंजा दो अपनी खिलखिलाहट से
कि हंस पड़े सारी दिशाएं
आओ कि पेड़ों ने तुम्हारी राहों में फूल बिखराए हैं
नन्हे हाथों ने रोपे थे जो पौधे
प्यास उनकी भी बुझा दो कि तुम्हें स्कूल बुला रहा है

देखो तो ज़रा, द्वार पे खड़ा सुरक्षा प्रहरी
तुम्हारे स्वागत में, मूंछों में मुस्कराया है।
तोतली मीठी बोली में 'अंकल' सुन
मन उसका भी हरषाया है
बाँध लो सबको पावन रिश्तों में कि तुम्हें स्कूल बुला रहा है

आशीष तुम्हें देने को
द्वार पे खड़ी माँ शारदा वागेश्वरी
वीणा के तारों को सुर दो कि तुम्हें स्कूल बुला रहा है ....

नन्ही उँगलियों से थामकर चंचल कलम को
चल पड़ो सृजन पथ पर कि तुम्हें स्कूल बुला रहा है
चले आओ प्यारे बच्चों कि तुम्हे स्कूल बुला रहा है

कमला निखुर्पा
प्राचार्या
केन्द्रीय विद्यालय, पिथौरागढ़

58

नव–प्रभात

चल उठ रे पथिक
क्यों बैठा तू उदास
हर अंधेरी रात के बाद
आता है नव–प्रभात।

स्वर्ण–रश्मियाँ सूरज की
करेंगी पथ का श्रृंगार
सजी–सँवरी मौन राहें
देंगी बाँहों का हार
संघर्ष–सुधा का रस छलके
गौरव–गाथा की गगरी भर ले
मायूसी का तोड़ व्यूह–चक्र
एक कदम साहस का धर ले
पर्वत हिलेगा, नदी–नीर चलेगा
हे कर्मवीर! कर करामात
हर अंधेरी रात के बाद
आता है नव–प्रभात।

शशि–कांति लाई तम का अंत
पल्लवित हृदय को लगे नए पंख
यह उद्घोष गीता का
कवि आज दोहराता है
प्रकट होता है वह जब
घनघोर अंधेरा छाता है
पुष्प–सी कोमल आशा
अब न मरने पाए
देखो यह अंधेरा अब
उजाला न हरने पाए
अंधकार मिटेगा, अब वीर बढ़ेगा
करने एक नई शुरुआत
हर अंधेरी रात के बाद ही तो
आता है नव–प्रभात।

कपिल कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक (भौतिकी)
केन्द्रीय विद्यालय क्र0 2, पोर्ट ब्लेयर

59
संकल्प दृढ प्रतिज्ञ रहें

अटल रहें, अडिग रहें,
ले संकल्प दृढ प्रतिज्ञ रहें,
हेमंत हो, बसन्त हो,
या पतझर का कन्त हो,
कदापि न जीवन में तेरे,
नैसर्गिकता का अंत हो,
पग, मग में हो, कि,
मग, पग में रहें,
ध्यातव्य इतना तू रख,
ले संकल्प दृढ प्रतिज्ञ रहें.

सम्पूर्णता से युक्त हो,
थाम तू उस वक्त को,
जीवन समर में जो बहे,
ऐसा धमनियों में रक्त हो,
मान, मान में रहे,
ध्यान, ज्ञान में रहे,
बात मेरी ये सदा,
तेरे ध्यान में रहे, कि,
ले संकल्प दृढ प्रतिज्ञ रहें.
बात कह दे ऐसी तू,
कि दौर इक चलता रहे,
फिर गंगा से यहाँ,
कोई भीष्म निकलता रहे,
आरम्भ तुझसे रहे,
प्रारंभ तुझसे रहे,
मिल न सके और को,
वो उपालंभ तुझसे रहे,
नव पुष्प का तू बन भ्रमर,
सौंदर्य में आखिल रहे, कि,
अटल रहे, अडिग रहे,
ले संकल्प दृढ प्रतिज्ञ रहे।

डॉ. असद अहमद
स्नातकोत्तर शिक्षक (अर्थशास्त्र)
केंद्रीय विद्यालय,
भारतीय प्रबंध संस्थान
लखनऊ

60
तकदीर

भाग्य के भरोसे कहां, तकदीर बनती है
केवल मेहनतकशों को ही, हमेशा तकदीर चुनती है,
डर–डर के कब यहां, कुछ हासिल होता है,
मुश्किलें ही मुश्किलें, पग–पग पर मिलती हैं।

मेहनत का नहीं मिलता है, यहां कोई और विकल्प,
जीवन को बदल सकते, केवल हिम्मत, लगन और संकल्प,
भाग्य, किस्मत और तकदीर तो कमजोरी दर्शाता है,
मेहनतकश तो अपनी तकदीर का खुद निर्माता है।

भाग्य के भरोसे, यहाँ कब किसकी नैया पार होती है,
हकीकत की लहरों और यथार्थ के बवंडर से टकराकर चूर होती है,
कायरों को ही यह बात शोभा देती है,
बिन किस्मत के कब किसकी तकदीर बदलती है,
बिन मेहनत ही फल की उम्मीद करते हैं,
ऐसे ही उनकी पूरी जिन्दगी बेकार कटती है।

कर्म कर, 'तेज' रख खुद पर भरोसा,
ना गंवा यूं ही जीवन का ये सुनहरी मौका,
भाग्य के भरोसे नहीं बदलती तकदीर है।

हमेशा मेहनतकशों ने ही बदली, अपने जीवन की तस्वीर है।
बिन संघर्ष के कब किसको कुछ मिलता है,
पुरूषार्थी ही हमेशा अपनी तकदीर बदलता है,
मुश्किलों से घबराकर, नहीं वो अपनी राह बदलता है,
जीवन की हर मुसीबत से डटकर पार पाता है।

अपनी तकदीर खुद, अपने आप बनाता है,
अपनी तकदीर खुद, अपने आप बनाता है।।

तेजपाल
सहायक अनुभाग अधिकारी,
केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
चण्डीगढ, संभाग

61
उम्मीद

मैं हर रोज सवेरे
बहुत सवेरे
निकलता हूं घर से बाहर
सुबह की सैर पर
और चलता चला जाता हूं दूर–बहुत दूर
फेफड़ों में भोर की ताजगी भरते हुए।

वापसी में चलते–चलते
पैर थक जाते हैं
और मैं बैठ जाता हूं हर रोज की तरह
नुक्कड़ की उस दुकान पर
जो अलसुबह खुल जाया करती है
सुस्ताता हूं थोड़ी देर
उलटने लगता हूं अखबार के पन्ने
और उतरने लगता है मेरा परिवेश मेरे भीतर
साथ ही उतरती चली जाती है
परिवेश की सारी विद्रूपताएँ
सारी विसंगतियाँ
सारी मलिनताएँ
सिर बोझिल होने लगता है
मन छटपटाता है
अंतर कहीं हूक उठती है

सभ्यता के किस दौर में आ पहुंचे हैं हम
मैं अखबार रख देता हूँ
आंखें भींच लेता हूँ
भीतर कहीं कुछ टूटने लगता है।

तभी सामने सड़क पर
ढेरों बच्चों की आवाज सुनाई देती है
मैं सिर उठाता हूं, देखता हूं
बच्चों की कतार चली जाती है
ये स्कूल जाते बच्चे हैं
उत्साह से लबरेज, हौसलों से भरपूर
मैं उनकी आंखों में झांकने की कोशिश करता हूं
और मुझे उनमें ढेर सारे सपने दिखाई पड़ते हैं
सुंदर भविष्य के सुनहरे सपने

मैं एक गहरी सांस लेता हूं
और उम्मीद से भर जाता हूं
बढ़ाता हूं अपने कदम
उत्साह से भरे कदम।

विनोद कुमार पाठक
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)
केंद्रीय विद्यालय, उमरोई कैंट

62
ज्ञान की खेती

मैं एक अध्यापक,
जो करता हूँ खेती ज्ञान की।

मेरी पूरी कहानी है,
जैसे एक किसान की।

वो करता है तैयार जमीन को,
फसल उगाने के लिए
मैं करता हूँ तैयार बाल मन,
ज्ञान दीप जलाने के लिए।

वो बोता है बीज,
देता है पानी और खाद
मैं बोता हूँ विचार,
देता हूँ तर्क और संवाद।

वो हटाता है खरपतवार,
बचाता है दूषित होने से
मैं हटाता हूँ मन के विकार,
बचाता हूँ प्रदूषित होने से।

वो रात दिन के श्रम से, अन्न उगाता है
देश को खिलाने के वास्ते
मैं तोड़ अँधेरे भ्रम के, नागरिक बनाता हूँ
देश को चलाने के वास्ते।

धूप है, आंधियां हैं, बरसात है,
कई दिक्कतों का साथ है
फिर भी लहलहाती हैं फसलें
जो प्रतीक हैं दिक्कतों की पराजय का।

अज्ञान है, विद्वेष है, कुविचार हैं
संकीर्णताओं से भरे संस्कार हैं
फिर भी मुस्कुराता है जीवन
जो प्रतीक है तर्क और ज्ञान की विजय का।

मैं सभी विषमताओं से लड़कर
जीने की उम्मीद जगाता हूँ
क्यूंकि, मैं एक अध्यापक,
करता हूँ खेती ज्ञान की।।

संदीप कुमार
स्नातकोत्तर शिक्षक (संगणक विज्ञान)
केंद्रीय विद्यालय, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
अगरतला

63
केंद्रीय विद्यालय संगठन

यूं तो खड़ा मैं छह दशकों से
अचल अडिग ज्ञान की ढाल बना
आपको आपका हक दिलाता
आपकी पहचान बना
मैं ही तो हूं, जिसने तुझे
वर्ष – प्रतिवर्ष परीक्षाओं में उतारा खरा
देख केंद्रीय विद्यालय संगठन के रूप में मैं तेरे साथ खड़ा।

मत होने देना शिकार तू
अपनी आकांक्षाओं और अपेक्षाओं का
शोषण से परे, समानता, स्वतंत्रत, शिक्षा संस्कृति,
विधि को अपना आधार बना
चल अब उठ, अपनी पहचान बना
मैं तो कर रहा अभिप्रेरित तुझे
देख तुझे बुलाता तुझे बनाता यह भव्य संसार बना
देख केंद्रीय विद्यालय संगठन के रूप में मैं तेरे साथ खड़ा।

मैं तो हूं तेरा मार्गदर्शक
मैं नहीं चाहता तुझसे कुछ भरसक
ऐ मेरे भविष्य,
समाज लोकतंत्र, गणतंत्र, धैर्य अभिव्यंजनात्मकता,
सृजनात्मकता, प्रतिष्ठा, बंधुत्व, एकत्व को अपना आधार बना
तू बने तो बने
बस खुद को एक अच्छा इंसान बना
खुद को एक अच्छा इंसान बना।

शीश पाल
प्राथमिक शिक्षक
केंद्रीय विद्यालय, राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान,
अगरतला

64

सफलता

आँधी के थपेड़ों से राही घबराते नहीं,
लहरों के आगे तैराक सर झुकाते नहीं,
क्या हुआ गर आ गई कोई मुश्किल कभी,
लड़ने वाले जिन्दगी से कभी घबराते नहीं।

कौन रोक सकता है प्रवाह हवा का,
समुद्र को कोई बाँध सकता नहीं,
गर ठान ले कर गुजरने की बात कोई,
बाधा कोई उसे रोक पाती नहीं।

नदी का वेग चाहे रोक दो,
शीतलता नदी की कोई रोक पाता नहीं,
करो लाख यत्न बाँटने का धरती,
पर आसमान कोई बाँट पाता नहीं।

कब हार मानता है जांबाज युद्ध में,
लड़ने वाले वीर पीठ दिखाते नहीं,
काट लाते हैं सर दुश्मन का,
किसी ब्रह्मास्त्र से भी वो घबराते नहीं।

क्या हुआ जो अभी नहीं मिला है,
साहसी के चेहरे पर उदासी कभी छाती नहीं,
उठ खड़ा हो, कर प्रयास तब तक
जब तक सफलता कदम चूम जाती नहीं।

महेश कुमार मीणा
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय कर्नूल

65
चलो एक नया हिंदुस्तान बनाते हैं

चलो एक नया हिंदुस्तान बनाते हैं,
चलो एक नया इतिहास रचाते हैं,
जहां न भूखा मरे कोई कुपोषण के शैतानों से
जहां न नन्हीं कलियाँ रौंदी जाये, हवस के हैवानों से,
जहां हो हर बच्चों के सपने साकार,
मिले उनकी सोच को विस्तृत आकार,
आविष्कारों के नए आयामों से,
नई सोच का भारत बनाते हैं,
चलो एक नया इतिहास रचाते हैं,
चलो एक नया हिंदुस्तान बनाते हैं।

अब न चढ़े कोई किसान फांसी के फंदे पर,
फल मिले उनको, उनकी कमरतोड़ मेहनत पर,
जब होगी चेहेरों पर, उनके हरियाली,
तब देखना चहुँ ओर फैलेगी खुशहाली,
तब समृद्धि के गीत गुनगुनाकर,
हर होठों पर मुस्कान लाते हैं,

चलों एक नया हिंदुस्तान बनाते हैं,
चलो एक नया इतिहास रचाते हैं।

आजादी के समीकरण को बदल देंगी बेटियां,
नित नए आयामों से, नया इतिहास रचेंगी बेटियां,
अब न दुःख के आँसू छलकेंगे,
जब पैदा होंगी बेटियां,
लिंग भेद के अनुपातों से,
चलो भारत को मुक्त बनाते हैं,
चलो एक नया इतिहास रचाते हैं,
चलो एक नया हिंदुस्तान बनाते हैं।

ममता श्री सिंह
मुख्य अध्यापिका
केंद्रीय विद्यालय, क्रमांक–1,
एयरफोर्स स्टेशन हिंडन
गाजियाबाद

66
अपराधी कौन

रात के अंधेरों में अक्सर सोचा करता हूँ
अपराधी कौन? मैं या मेरे हालात थे,
क्यों छीना उसने मेरा बचपन
मेरे भी तो कुछ जज्बात थे।

सांया बिन माँ–बाप के जीवन रहा अंधकार
सही–गलत बताने की खातिर सिर पर न कोई हाथ रहा,
वक्त ने जो भी सिखाया वही मेरे संस्कार थे
अपराधी कौन? मैं या मेरे हालात थे।

जीवन में कुछ बन जाने का मेरा भी इरादा था
लेकिन भूख ने पूरा बचपन जर्जर कर डाला था,
रात का अंधेरा और तन्हाई बस यही मेरे साथ थे
अपराधी कौन? मैं या मेरे हालात थे।

जिन दिनों हाथ में कलम और कंधे पे बस्ता होता
बचपन के खिलौने और माँ का प्यार बड़ा सस्ता होता,
उन दिनों हाथों में जिंदगी के अनगिनत सवाल थे
अपराधी कौन? मैं या मेरे हालात थे।

जिंदगी का बड़ा ही अलग हिसाब था
गरीबी और अमीरी के बीच फासला बेहिसाब था,
वक्त ने बेवक्त दर्द दिए बेशुमार थे
अपराधी कौन? मैं या मेरे हालात थे।

अक्सर ही ठुकराया गया हूं अपने ही समाज में
कभी स्कूल कभी मंदिर कभी भरे बाजार में
तुम लोगों के शायद यही रीति–रिवाज थे
अपराधी कौन? मैं या मेरे हालात थे।

प्रदीप कुमार
कनिष्ठ सचिवालय सहायक
प्रशा. 2 अनुभाग, केविसं. (मु.)

67

खुशियों का पता

जीवन में यूँ हारो नहीं तुम
किसी और का पथ निहारो नहीं तुम
खुद ही चलो और आगे बढ़ो
मंजिल तुम्हारा पता जानती है।।

जीता वही जो मन से न हारा
लहर है जहाँ वहीं है किनारा
लहर तो किनारे का पता जानती है।

खुद ही चलो और आगे बढ़ो
मंजिल तुम्हारा पता जानती है।।

कठिन हो समय जब धीरज न खोना
गुलाबों से सीखो काँटो में खिलना
समस्या खुद अपना हल जानती है।

खुद ही चलो और आगे बढ़ो
मंजिल तुम्हारा पता जानती है।।

जीवन की बगिया सुख–दुख से महके
मेहनत से अपनी जो इसको सींचे
खुशी उसके घर का पता जानती है।
खुद ही चलो और आगे बढ़ो
मंजिल तुम्हारा पता जानती है।।

साधना कुमारी सचान
प्राथमिक शिक्षिका
केन्द्रीय विद्यालय नं.–1, अर्मापुर, कानपुर

68

फानी – एक महातूफान

फानी तूफान आया
अपने साथ जलजला लाया,
इंतज़ार तो हमें भी था
स्वागत करें/अनुभव करें तूफान का,
पर ये उम्मीद न थी कि ये बर्बादी,
ये कहर, इस कदर होगी।

आँखों को क्षणिक सुकून तो मिला
फानी महातूफान के दीदार का,
पर सोचता हूँ, कि काश
यह आता हीं नहीं तो
अच्छा होता।

हरे–भरे पेड़ो का टूटना,
बिखरना भी देखा,
आश्रयविहीन हुए पक्षियों
एवं पशुओं की
उदासी भी देखी,
बड़े–बड़े शो–रूम के शीशे
चटकते भी देखे,
बिजली के शान से खड़े
खम्भों को
टूटते भी देखा।

पानी–बिजली के महत्व का
अनुभव भी पाया,

केन्द्रीय विद्यालय परिसर के
सागवान पेड़ों पर रात में
विश्राम करने वाले बंदरो को
बेघर होते भी देखा,
पानी की बूंद–बूंद के लिए
चिंतित लोगों को भी देखा।

महात्रासदी की बेला में
सरकारों की असहायता,
विवशता भी देखी,
संकट की बेला में
कॉलोनी निवासियों की
अभूतपूर्व एकता व
सामूहिक श्रम भी देखा।

नंदन कानन चिड़ियाघर में
दस हज़ार पेड़ों के गिरने का
मंजर भी सुना।

भुवनेश्वर में चालीस हज़ार
बिजली के खम्भे गिरने की
खबर भी सुनी,
नं. 1 स्मार्ट सिटी को
बदरंग होते भी देखा,
श्रीक्षेत्र पुरी के
श्रीविहीन होने का
मंजर भी देखा।

जिन्हें इन आपदा से लड़ने की
आधिकारिक जिम्मेदारी थी,
उन्हें भी राजधानी के बड़े–बड़े होटलों

में आश्रय लेते व जिम्मेदारी से
बचने की कहानियाँ भी सुनी,
जनता का हाल बेहाल
होते भी देखा,
सुस्त गति से बिजली–पानी
बहाल होते भी देखा।

लाखों पशुओं की मौत की
खबर भी सुनी,
फानी से लाखो लोगों को
बेघर होते भी देखा,
समुद्र तटीय राज्यों को
ऐसी आपदा से लड़ने हेतु
आवश्यक समन्वय एवं संरचना की
आवश्यकता भी महसूस की।

हे फानी! तुम एक महातूफान नहीं,
अपितु एक शिक्षक की भांति हमें
अपने पर्यावरण के संरक्षण
एवं संवर्धन की
शिक्षा दे कर गये।

मित्रों! अब देर किस बात की,
आइये हम पर्यावरण हितैषी बनें,
पर्यावरण का संरक्षण करें एवं
आने वाली पीढ़ी की रक्षा करें।

प्रवीण कुमार
अनुभाग अधिकारी
केन्द्रीय विद्यालय संगठन,
भुवनेश्वर संभाग

69
खरे-खारे

सच कहने की हिम्मत सब में नहीं होती,
उसी तरह सच सुनने की आदत सब में नहीं होती
क्योंकि हम जी रहे हैं कलयुग में
जहाँ खरे रहने की जिद सब मैं नहीं होती।

स्वर्ण भी अपना रूप बदलता है, बाजार भाव के लिए,
अपनी तरलता को छोड़ ठोस हो जाता है
और उसका वास्तविक स्वरूप कहीं गौण हो जाता है
हम बहुत मीठे हो गए हैं मीठा बोलते–बोलते
और कान नहीं थकते मीठा सुनते–सुनते
इसीलिए शायद इस युग की महामारी है मधुमेह
ऐसे में खरे और खारेपन का अभाव हमेशा खलता है

कुछ ही सही, परन्तु ऐसे लोगों को देख श्रद्धा से सर अपने आप झुकता है
वक्त के साथ नदियाँ अपना रुख चाहे बदल दें
परन्तु खारे–खरे दृढ़ समुद्र कभी विचलित नहीं होते

डॉ. विधि बिष्ट
कला अध्यापिका
केंद्रीय विद्यालय, भीमताल,
उत्तराखण्ड

70
परिंदे

परिंदे न दिन, न दोपहर देखते हैं
मिल जाए दाना–पानी ऐसा दर देखते हैं
तुम देख रहे हो पतंग आसमान में
हम तो घायल परिंदों के पर देखते हैं
मिल जाए अगर मौका तस्वीर बदल दे
हम बच्चों में छिपे हुए ऐसे हुनर देखते हैं
गलतियाँ निकालने का लग जाता है इल्जाम
किसी भी चीज को गौर से अगर देखते हैं
घर से निकले कैसे, आज कोहरा है बहुत
धुंध में लिपटा हुआ सारा शहर देखते हैं
ऊँची उठती हुई देख कर लहरें दरिया में
हम मुश्किल में मंजिल का सफर देखते हैं
जाने क्या कहा हवाओं ने फूलों के कान में
हर तरफ महकती बहारों का असर देखते हैं।

अनिल कुमार यादव
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक (हिन्दी)
केन्द्रीय विद्यालय, रेलवे कॉलानी,
फुलेरा, राजस्थान

71
स्कूल चलें हम

केंद्रीय विद्यालय उपवन है, शिक्षक इसके माली
शिक्षा की खुशबू से झूमे, तरु की डाली–डाली
हम बच्चे हैं फूल चमन के, हम में भी है दम
स्कूल चलें हम, स्कूल चलें हम।

केंद्रीय विद्यालय मंदिर है, शिक्षक सभी पुजारी
बच्चे भक्त–भजनमय प्रतिपल, शिक्षा पूजा हमारी
पूजन सामग्री पुस्तक है, हम न किसी से कम
स्कूल चलें हम, स्कूल चलें हम।

केंद्रीय विद्यालय दीपक है, शिक्षक सारे बाती
हम बच्चे हैं तेल दीप के, ज्योति जलै दिन–राती
जनमानस का मिटै अधेरा, हमें नहीं कुछ गम
स्कूल चलें हम, स्कूल चलें हम।

यह भारत सरकार का उपक्रम, कितनी अच्छी सोच
सभी पढ़ें और सभी बढें, नहीं कोई संकोच
शिक्षा है अनमोल रतन, पढ़ना कर्तव्य परम
स्कूल चलें हम, स्कूल चलें हम।

जगदीश सिंह यादव
स्नातक शिक्षक (संस्कृत)
केन्द्रीय विद्यालय, इस्पात संयंत्र, विशाखापत्तनम्

72

किसी के बारे कुछ भी अक्सर कह जाते हैं लोग

किसी के बारे कुछ भी अक्सर कह जाते हैं लोग,
उन पे फब्ती कसी किसी ने, बिदक जाते हैं लोग।

पूछते हैं हाल पहले, फिर जोर से हँस देते हैं,
जाते–जाते नसीहत कोई दे जाते हैं लोग।

जख़्म दिल के भर गये पर दाग़ रह गये थे,
दागों को फिर जख़्म नया दे जाते हैं लोग।

देखते नहीं जवानी अपनी, नज़रें हमें दिखाते हैं,
यूँ ही किसी के नाम पे मुझे टोक जाते हैं लोग।

ख़्वाहिशों की ख़ातिर यहाँ पगड़ी तक उछल गई,
चुल्लू भर पानी में ही डूब जाते हैं लोग।

जो गुजरा वो ज़लजला था, सिर्फ़ वाक्या नहीं,
हँसते रहे हम, अक्सर टूट जाते हैं लोग।

डॉ शचिकांत
संयुक्त आयुक्त (कार्मिक)
केविसं (मु)

73

The Absolute

Be in the core of my heart
Filter all that I see on earth,
Avert my eyes from the evils –
Steer me to the path that worth

Undo the magnetism of avarice
That drags to unhealthy path;
Let me face the earthly plight
Keep me bereft of wrath

Let me not yearn for beauty
Get me to the beauty of soul;
Make me the disciple of duty
Leave me not even beyond the pole

Teach me the lesson of life
Which is unbound by one -
Where misery of days are trivial
The agony is dated and won

Shower your blessings on me
The prolific source of courage,
Powered with incessant vigor
That leads beyond celestial edge

Basudev Chakraborty
Senior Secretariat Assistant
Kendriya Vidyalaya Sangathan, Kolkata RO

74
Let Us Ponder!

Fear, care and commitment
My life is bound to these three
Of which I might not make myself free

I would always sacrifice
Yield everything that's mine
For the bond that I have bound myself to

I believed only 'I' would be responsible
For what I am, 'I' would be the force
Behind my success, 'I' would be the reason
For happiness
And none other

For the fear, for the pride
For the feeling that only 'I'
Should be reason for my life
I lost many things,
There was sadness in my cheerfulness
There was void in my fullness
For I knew that,
I might delay but can't deny

Finally I accepted
Accepted that others,
Others could also be the reason
For my happiness
The reason that breathed

Happiness into my life
The reason that, I have never known before
The reason that, took away my pain
The reason that
Made me a new person

Suddenly, I realised
I was already weak
Strength was gone
I yearned for support
I was eager to have
The lending ear
That helping hand
The understanding heart and the
Comforting soul

In the process,
Selfishness crept in
I wanted that reason
The reason,
That made me smile, a true smile
The reason that brought
Serenity and peace
To be with me forever!

But, I know, that would be impossible
Since, the bond of three still binds me
And I know I'll never be free

Sridevi Vijay Shinde
PGT (Biology)
KV INS Hamla

75

A Plea

Please don't label me;
Low achiever, late bloomer or slow learner;
Don't keep me away or aloof;
It condemns me to live with guilt

Don't sneer at my low esteem;
Or jeer at my incomplete assignment,
Don't glare me when I fumble,
It just kills me from inside

Don't scowl at my imbecility;
Understand me, I am born so.
I cannot be like others,
Numbness of poverty sucks me

I try to impress you;
With all smartness and intelligence,
But I am bad at emulating,
I am me, just want to be me

You often make fun of me;

For being distracted from class,
How should I tell you?
When my own survival is at stake!

I woo my wretched father,
Not to deprive me of right to education;
Remember, I am the first generation learner;
May be you need to work more on me
I come to school with million dreams;
To empty them before you,
Teach me what I can learn
Accept me for what I am

This is my earnest prayer to you;
Hold me, in these turbulent times,
My saviour, My teacher

C. Madhuri
PGT (English)
KV Mahabubnagar

76

Life, In Its True Shades!!!

Life is a vicious cycle of pleasure and pain;
One has to face it without being abstain
The rounds may be smooth, may be rough;
One has to abide by being soft and tough

The span we get sets some goals for us;
These goals decides, if we are with heads or just nuts
Life's challenges are accepted by winners to face;
While the same for losers become the reasons to escape

Hope is to be linked with every pain;
As there is no ordeal forever, to remain
And for every pleasure attach a chain;
Just being prudent, time may bring some unpleasant rain

Beauty of life lies in freedom from fear;
As fears are worldly: And lately it gets clear;
The eternal joy and boldness come to those,
Who devote themselves for humanity like rose!!!

Amit Kumar Pandey
TGT (Maths)
KV Talbehat

77

A Letter to Parents

Dear Parents,
May I draw your kind attention
Please nurture your child with care and caution
You may have in your heart, immense love and affection,
But never turn a blind eye to her mistakes that need correction

Please guide her to strive for excellence with
passion and dedication,
But at the same time teach her to accept failure
with grace and conviction
Kindly tell her that life is not all about test and examination
Let her know the subtle difference between hope
and expectation

Never overburden her with your wishes and ambition
Rather she should pursue her goal with a vision and dedication
Please see that your child becomes a balanced person
With values like kindness and compassion for
poor and downtrodden

You should understand she is bestowed with
talent latent and hidden
Your patience and guidance will help her to
shine among the millions
Dear Parents, these are few lines of suggestion as
I have strong notion
You, being the first teacher can leave an indelible impression

Biranchi Narayan Das
Principal
KV Khurda Road
Jatni

78

Lesson for Lifetime

The emerging bright spirited Sun
The twinkling multifarous millions of stars
Moon's sail over the desolate overcast ocean
The mesmerising modest horizon bars,
Mutter all through all the time
A lesson for lifetime

The dimmer of gabby glow-worm
The splashing stupendous blue-whales
Drones beckoning bees in a swarm
The species – females and males,
Sibilate all through all the time
A lesson for lifetime

The Chinars challenging the hilltop
The little lily embellishing the twig
Brooks' bicker that never do stop
The pea-petal and flowering-fig,
Orate all through all the time
A lesson for lifetime

Then why do men in this heaven
Smash, separate, spoil and scatter
Transmit terror, tort in this haven
Dwell like devil's selfish hector?
Conceive not all through all the time
A human lesson for lifetime!

Ashwini Kumar
PGT (English)
KV No 2, AFS, Chakeri, Kanpur

79

Flight of Fancy

Imagination is that winged creature
Which takes the flight of fancy
To reach a space
That is not perceived by our senses

Taking our hands it plunges us
In a world, far removed from our own
Where we can leave behind
The toil and troubles of
Our mundane existence

By submerging us
In a beauty so sublime
Which envelopes us
in a cocoon of contentment
Not easily discernible

They say that, necessity is the mother of invention
And therefore it is not wrong of us to assume
That Imagination is the force
That impregnates it

Every innovation and invention
Cannot be brought to the planes of reality
Without first being thought of
In the flight of fancy

When we let go of the mind's control
And let our subconscious take hold
Over our cognitive senses
The perception it inspires
Is something to be desired

Man's true might can only be realized
Not leaving our pragmatic senses behind
But infusing it with that potent concoction
Which is known as imagination

Sruti Agarwal
PGT (English)
KV Kausani

80
The Morning Dew

At the dawn, after a rainy night
I found a drop of dew
Near the edge of a grass
Whose bright green color
And the shine of the dew
Sparkled in my eyes

I looked at the dew drop
It was like looking at the rainbow
After a rain
As I gazed through my window
I saw those chirping birds,
Who were also happy during the sunrise

I looked at the rose bud,
Enrobed with the dew drops
Spreading the fragrance
Through the day long

I looked at those silent paths
It seemed to be shining
Like the white pearls in the ocean,
The ocean of life
I looked at the life;

And found the heart
Full of those dew drops
Which remained for a while
Like the pearl ,
The pearl like the dewdrops!

Manju Pathak
PGT (Biology)
KV, Koliwada, Antop Hill

81

Feminism –A Vision for an Equal World

In today's world of modernism,
We still face lack of feminism

Feminism doesn't mean that women are superior,
Nor men are inferior

It is not about 'LADIES FIRST,
It means who deserves better should be first

It says we shouldn't belittle any gender,
The stereotypes must be abolished of boys' being tough'
& girls 'being tender'

For supporting feminism;
"GIRLS MUST BE RESPECTED" stop teaching this to your son,
Instead teach your children to respect each and everyone

We just can't ignore men,
For we need them to accept and support all the deserving women

Feminism is all about equal respect, acceptance and opportunity,

For the betterment of this world, start, seeking equality with grace and dignity

Start doing this from today's date,
Or else someday it will be quite late

Garima Joshi
PRT
KV No.1, Roorkee

82

A Lasting Name

What really fashions a name?
Affluence?
No, it's fleeting like a clown's tears
Gold is a merchant's living, traders seldom seek applause,
Do roses hold on till the moon surges to bloom again?

Letters must then sculpt renown?
Facts are a scholar's delight, proverbs a preacher's profession.
Who extols lofty accumulation?
Random experiments address mundane concerns,
Handful inventions scarcely add to the size of man

Do pilgrimages ever personify glories?
Fame is too prolific to be precise,
Even weeds restrain barrenness;
What if you are a small fry?
Make your attributes consequential

Renown strived for is a mere transitory game
Your capacity to spare a 'musing' space,
A prized thought for the glorious unsung;
Your will to trounce baneful passions merits laurels

Your grit to surmount the tsunami, tame the tempests,
A valorous volition to reach out and heal;
A valiant ambition to better the lot of Man,
Shall carve a lasting niche that decades will celebrate,
And ages will treasure

Dr. S S Aswal
PGT(English)
KV No. 2, AFS, Ambala Cantt.

83
Epiphany

I stood frozen
On the threshold of dilemma and you came
Dear teacher
Thy benign presence
was like the first sight,
The first sound from the mother-tongue
The first maternal touch
That a neonate absorbs

And you smiled
Lo! Behold! the ice melted
Rippling through my tiny bones
and equally rhyming heart
It drenched me
with the gaiety of a village river
and a golden magic
Stretched for miles in my life
Nostalgic I remember as a KV alumni
Obviating all glamorous
Well clad fluent and affluent
Parents
You touched my hand
Nay, my heart
and taught me the

first lesson of eagalitarianism
the basic doctrine of a KVIAN
Could protesting eyes
Blinking the message
Untouchable
Untouchable
Silence the deep call
Emanating from your heart?
Nay, Not at all

Upholding your passion as a teacher truthfully
Adding lustre to my life
You took me to a sublime height
Illuminating the unfading life
Again and again
Today
Standing on the pinnacle of success
I reminiscent
that moment as tiny yet great as infinity
the symbol of epiphany
I salute thou my teacher

Preeti Roy
Principal
KV No. 3, Bhubaneswar

84

I Found It

It's true
Every soul on this globe
Is rummaging for happiness
I am not an exception
I was only looking for it in the
-translucent rays of sunshine
-transparent drops of rain
- the coherent turf
- miniscules of essentials
The search was too refractory
I also explored my solidarity,
I tried to keep it with me,
But it was arduous too
The finding was laborious, heavy and tough
Because
I thought my happiness was enough!
And, Yes,
I did find it
No, not in an affluence or bounty
Nor in any sort of recognition
Or financial gain!
But, yes, I did find it
Just very close to me,
That is, just inside me

And that is
-My Mind
My happiness is my state of mind,
It's my power of joy
It's my power to rejoice
The tit-bits of happiness I impart
Returns to shine on me
That is my happiness
Yes, I found it

Rupam Bhatnagar
TGT (Maths)
KV, Pragati Vihar, Delhi

85

Life A King Size

A seed shoots a plant,
A bud, blossoms a beauty
A watch ticks hours
Months roll by years
Time flies by unnoticed
What's lost and gained
Is weighed in notes and votes
Caring least for right ways
Strive, thrive, to live a life
Fruitful, meaningful and joyful
'cause its love, not hatred
If you can spare, Share and care
Life lived must be worth it
Be not a bundle of remorse,
'cause time can't change the begone
Wake up, live a life,
A meaningful one, the only one,
An Unimaginable, unthinkable
A matchless, priceless gift,
A life that's king size!

Bhagyashree P Mokashi
PRT
KV No. 2, Colaba

86

Not Alone on the Path to My Home

A small smiling rain drop
Falls into the palm of mine!
A beautiful shining world
Unfurls itself before me!
Let me go into see it!
Look! How rich I am!
The Sun, the Moon, the Stars,
The mighty ocean and the blue sky in me!
Let me melt the deadly weapons
With the fire of the sunrays!
Let me drown poverty
In the depth of the mighty waves!
Let me fly across the skies with an olive
Piercing the dark veils of corrupt minds !
Let me build a new world
With the tranquillity of the moon
Where stars twinkle in every little palm
To join me on my way to our home!

B. Lekha
TGT (English)
KV. No.1, Jipmer Campus

87

The Curse of the Kosi

The river in full spate
Took the life of many
Some yelped for help,
Some drowned `ere they could

The state stood aghast
Running from pillar to post
The sight of utter helplessness
Spread the pall further
The blaming game was on
All found someone to crucify
But, unaware of it all
A lonely hand touched me

Startled! I felt the coldness
The death fire gyrated in the roulette!
Oh cruel fate, oh great leveler
Clinched every soul gurgling, warbling merrily
Till it grew thunderous and tumultuous

Putting on a brave front
The rickshaw puller plods on,
Halt, he can never, to grieve the child
Wrenched by fate, from his mortal grip

His heart a glowing hearth
And eyes fiery red with unshed tears,
Wearily, he plods on, as many lives
Will cease, if he crumbles down

The river now ripples along the fallow
The quench for blood satiated
Masquerading she flows till boredom strikes
To cast the curse yet once again

'Oh master, cast not your curse in the fury
At the helpless –look yonder to the
Rainbow against the azure sky, and recall
The covenant made to man, I plead'

Elizabeth K Philip
PGT (English)
KV, Hebbal, Bengaluru

88

All is Not Lost

Have you ever lost your peace of mind?
When you see the world replete with atrocious crimes?
Wisdom has been taken hostage by shining gold;
"Voice of conscience" has been stifled or simply sold
We like "islands" are surrounded by tormenting seas;
The world looks dreadful devoid of birds and trees
Is there no solution to save the world from doom?
The optimistic words, **"All is not lost"** is heard with a boom.
Saints, seers' noblemen abound in world's illustrious history;
Their noble teachings can transform this morbid world surely
To transform this heinous world into "Paradise";
The intelligentsia must work judiciously, awake and arise
Our duty is to show our successors the right path;
Tell them, **"All is not lost"** if they have a determined heart

Jayasree Bhattacharyya
PGT (English)
KV, New Cantt. Allahabad

89

The First Footstep

A child is born, he longs for life,
Short of love, he cannot survive,
He takes the first breath of sweet air,
He hopes, he will live without fear

The morning at break dazzels in sunshine,
It looks the day will be bright and clean.
The child basks in the warmth of sun,
He hopes that his days will so run

And lo a patch of clouds in the sky,
It darkens the brightness on high.
The child unaware blushes and smile,
With dreaming eyes, he welcomes it a while

The darkness spreads and threatens danger,
The child feels shaky, looks for a succor,
A benign wind arises, and dispels the darkness,
The child feels relieved in the wind's kindness

He has the first taste of love and affection,
He realises, they are life protection
He eagerly aspires to become worthy of it,
He wishes to serve the lovers with his little might

The days pass into months and years,
The child grows with strength and vigour
He is now grown with fifty four years,
He promises all to serve sincere

Sudip Mazumdar
TGT (Biology)
Kendriya Vidyalay No.3, Agra

90

Jolly Moments

Relatives, friends, neighbours pour in
With wishes, gifts for celebration;
Continuous crying of a newborn
Fill the home air with jubilation

Pram, sling add on features
With lovely blinking of eyes;
The infant with chubby cheeks
Playfully in mother's lap lies

Shining face, satchel on back
A book, water bottle & tiffin;
The child puts his step forth
While slightly a fearful within

Volley of queries n anxieties
Sense of insecurity n inhibition;
Adolescent shyly pace forth with
Low esteem n scared expression

Deep sighs - literally a lovelorn
Smitten by flair of a fair maid;
The youth surely in any case
Would follow, wander or wade

Now the turn of challenges
An inclination to touch skies;
With diligence and dedication
The man overcomes all shies

LIFE MOVES ON.....

Neelam Dudi
TGT (English)
K V, Jharoda Kalan, Delhi

91
My Mother Doesn't Work

In a class of "Gender and economy" the teacher puts a query,
Whose mother works?
Pinku, Rinku, Tina, Lina many others
Raise hands like mobile towers
Pinku explains about his pilot mom
Her amenities and money with a jump.
Tina gives details of her mother
Posted as the Executive Engineer
Pre mover joys and simply tells
He is the son of a woman
None other than Collector of East Kamen
Teacher feels proud,
She teaches the off springs of such endowed!
It was the turn of Mili
Innocently answers,
That her mother cooks, cleans and cares home
Laughter spreads that lasts for a minute.
With tears in eyes, Mili continues
My mom gets up as first person
Rests as the last
I miss my school, father takes leave when she is sick.
She serves food flavoured with love

Without her the beautiful house, turns to hell
Like the dirty boggy of local mail
If my mother's work is not the work, what else is work?
Silence prevails in the room
Mates and teacher clapped and clapped
Agree Mili
She concluded with a shout, how can you say?
My mother doesn't work, my mother doesn't work!

Pramod Barik
PGT (Economics)
KV No.1, Sambalpur

92

Scientific Temperament

A school needs to nurture the students
to make them think different
Train them to learn everything with exuberance
While logic and reasoning make their knowledge
shine with radiance
Societal studies invokes their conscious to make
them lead with compassion

Then the windows are opened to see what season has set in
Makes the kid wonder why summer or winter has come in
Thinks about everything from gravity to geography in
their environmental din
Streams of curiosity let's them reason and question,
processes that model them to win

Physics is an abstract subject
Although light waves cannot be seen,
It makes students to see through superstition's smoke screen
That let's the students' standout with sheen.

Chemistry is a fascinating science of reactions
Let's students to organize elements under eccentric classification

While Botany let's student understand everything from
evolution to plantation
Computers are the new sciences that let's student march into
future with progression

Sciences compel students to think about planet's sustainability
Students should be trained about environmental issues
with creativity
It's our responsibility to preserve the environment and
ecosystem with sincerity
Because our younger generation deserve to realize dreams
with their capabilities

JSV Lakshmi
Assistant Commissioner
Kendriya Vidyalaya Sangathan
Hyderabad RO

93

The Sunrise In Kashmir

The Sunrise .... In Kashmir
Bright is the dawn
After a long thirty year night
hope is born

Hope, hope works
And fear becomes faith
Terror becomes trust

Hope, gunshots become
Melody of birds

I know my valley
It is the home of Saints
Saints of peace

I hope
Prayers and tears will
Wash the gloom

Void is deep but,
Hope is deeper

Still cherish those forlorn
Memories
They must have forgotten me
Those Chinars with cool shade
Waterfalls with music of life
Lakes with dancing sunrays

Mountains with serene beauty
Meadows running wild
Rivers of love and Blessings
Groves with shades of ecstacy

Will they wake up to welcome me
From slumber of thirty years

Hope it happens
And I pray in the small temple
I know
I breathe the air I was born in
Quench the thirst of long thirty years
With nectar of my land

I hope I find a place
To go for my eternal
Sleep in my land

Where I was born
I hope.....

Veena Lidhoo
PGT (English)
KV No. 2, Delhi Cantt

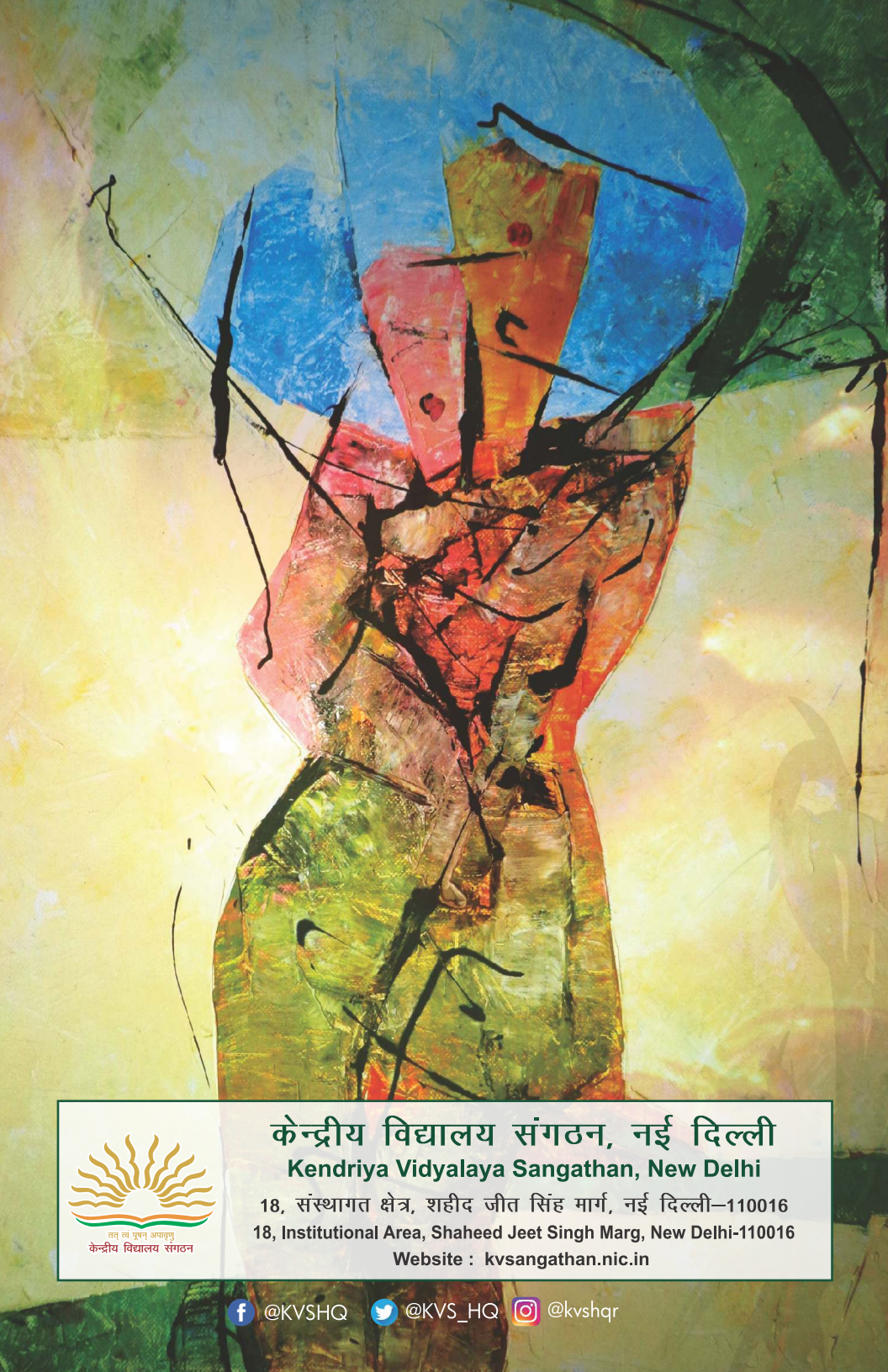

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली

Kendriya Vidyalaya Sangathan, New Delhi

18, संस्थागत क्षेत्र, शहीद जीत सिंह मार्ग, नई दिल्ली–110016

18, Institutional Area, Shaheed Jeet Singh Marg, New Delhi-110016

Website : kvsangathan.nic.in

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

@KVSHQ @KVS_HQ @kvshqr